सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेश में (वार्षिक)	30 यू.एस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफत व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफत व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2011 | वर्ष 10 | अंक 03

इस्लाम

गवाही दो नहीं माबूद
अल्लाह के सिवा कोई
मुहम्मद हैं नबी उसके
नबी उनसा नहीं कोई
नमाजें पाँच वक़्तों की
तो रोजे माहे रमज़ाँ के
फ़रीजे ये ख़ुदा के हैं
नहीं इनसे बचा कोई
ज़कातें माले सालाना
है लाज़िम माल वालों पर
ख़ुदा ने गर है दी ताक़त
अदा करले तू हज भाई
दुरूद उनपर सलाम उनपर
मिला जिनसे हमें ईमां
पढ़े हर शख़्स ताक़त भर
न बुख़्ल इस में करे कोई

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाईन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर फार्म पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
मुसलमानों में जात–पात	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	8
हिदायत की किताब	बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी	9
बुज़ुर्गों से फाएदा कैसे हासिल किया जाए?	मौलाना नजरुल हफीज नदवी	11
स्वयं को पहचानिए	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	13
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	17
हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का दावती मिजाज़	बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी	18
आदर्श शासक	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	21
जुनूबी कोरिया मों दावते इस्लाम	डॉ0 अब्दुल वहाब नदवी	22
मानवता के उदाहरण	इदारा	25
सहाबा रज़ि0 के हुकूक़ व आदाब	खालिद फैसल नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	28
खुदकुशी की अस्ल वजह सोच की ख़राबी	ज़हीर ललितपुरी	32
शिर्क की वास्तविकता	मुहम्मद हसन नदवी	35
सिगरेट के धुएं का छल्ला बनाकर	उबैद अहमद सिद्दीकी	37
एक महत्वपूर्ण अनुवादित पुस्तक का परिचय	इदारा	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उरमानी

सूर–ए–बक़र:

अनुवाद : और जब कहा मूसा ने अपनी कौम से[1] और क़ौम ने नुक़सान किया अपना, ये बछड़ा बना कर, अतः अब क्षमा मांगो अपने पैदा करने वाले रब से और मार डालो अपनी–अपनी जान[2], ये बेहतर है तुम्हारे लिए तुम्हारे सृष्टिकर्ता के निकट, फिर ध्यान दिया तुम्हारी ओर[3], निःसन्देह वही है माफ करने वाला मेहरबान(54), और जब तुमने कहा ऐ मूसा! हम कदापि विश्वास नहीं करेगें तेरा कि जब तक देख न लें, अल्लाह को सामने, फिर दबोच लिया बिजली ने, और तुम देख रहे थे(55) फिर उठा कर खड़ा किया मरने के बाद, ताकि तुम एहसान मानो[4](56) और साया किया हम ने तुम पर बादलों का, और उतारा तुम पर मन व सल्वा[5], खाओ पवित्र चीज़े जो हमने तुमको दीं[6] और उन्होंने कुछ नुकसान न किया बल्कि अपना ही नुक़सान करते रहे[7](57)।

तफ़सीर (व्याख्या)

1. क़ौम से मुराद (आशय) वह लोग हैं जिन्होंने बछड़े को सज्दा किया।

2. अर्थात जिन्होंने बछड़े को सज्दा नहीं किया था वह सज्दा करने वालों को क़त्ल करें। और अन्य लोगों का कहना है कि बनी इसराईल में तीन गिरोह थे। एक वह जिसने गाय की पूजा नही की और दूसरों को भी रोका। दूसरा वह जिसने गाय की पूजा की। तीसरा वह गिरोह जिसने स्वयं तो सज्दा न किया मगर दूसरों को मना भी नहीं किया। गिरोह नम्बर दो को आदेश हुआ कि क़त्ल हो जाने के लिए तैयार हो जाओ। तीसरे गिरोह को आदेश हुआ कि उनको क़त्ल करो ताकि उनके चुप रहने की तौबा हो जाए। और पहला गिरोह इस प्रायश्चित में शामिल न हुआ क्योंकि उन्हें प्रायश्चित की इच्छा न थी।

3. इस्लामी विद्वानों का इसमें विभिन्नता (इख्तिलाफ) है कि बधित (मक़्तूल) हो जाना ही तौबा थी या तौबा का ततिम्मा था कि हमारी शरीअत (इस्लामी विधान) में हर पहलू से सजा के पात्र ठहराए गए, हत्यारे के प्रायश्चित को स्वीकृति प्रदान करने के लिए ये भी आवश्यक है कि वह स्वयं को बधित (मक़्तूल) के परिवार वालों के हवाले कर दे, उनको अधिकार है कि बदला लें या क्षमा कर दें।

4. उस समय को भी अवश्य याद करो कि इतने उपकारों के बावजूद तुमने कहा था कि ऐ मूसा! हम कदापि तुम्हारा विश्वास न करेंगे कि ये अल्लाह का कलाम (ईशवाणी) है, जब तक आँखों से अल्लाह को देख न लें। इस पर बिजली ने तुमको हलाक किया, उसके बाद मूसा अलै0 की दुआ से हमने तुमको ज़िन्दा किया। ये उस समय की बात है जब मूसा अलै0 सत्तर आदमियों को चयनित कर कोहे तूर पर ईशवाणी सुनाने हेतु ले गए थे। फिर जब उन्होंने कलामे इलाही को सुना तो उन्हीं सत्तर ने कहा कि ऐ मूसा! हम पर्दे में सुनकर विश्वास नहीं ला सकते, हमें आखों से खुदा को दिखाओ। इस पर उन सत्तर आदमियों को बिजली ने हलाक कर दिया था।

5. जब फिरऔन डूब कर हलाक हो गया तो बनी इसराईल अल्लाह के हुक्म से मिस्र से शाम

शेष पृष्ठ .....7 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

-अनु0: नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

घर में दाखिल होने की इजाज़त और उसके आदाब

कुर्आन

ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा किसी घर में बग़ैर इजाज़त न जाया करो, जब तक की इजाज़त न ले लो और घर वालों को सलाम न कर लो।

(सूरः नूर 4)

जब तुम्हारे लड़के व्यस्कता की सीमा को पहुँच जाएं तो उनको चाहिये कि उसी तरह इजाज़त लें जिस तरह उनके अगले इजाज़त लेते थे। (सूरः नूर 8)

हदीस

तीन बार इजाज़त लेना—

हज़रत अबू मूसा **अश्अरी** रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि तीन बार इजाज़त लेनी चाहिए और अगर इजाज़त न मिले तो पलट जाओ। (बुखारी—मुस्लिम)

इजाज़त लेने की वजह

हज़रत सहल बिन साद रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि इजाज़त लेने को इसलिए कहा गया कि नामह्रम पर नज़र न पड़ जाए।

(बुखारी—मुस्लिम)

इजाज़त माँगने का तरीक़ा

हज़रत रबअी बिन हिराश रज़ि0 से रिवायत है कि बनू आमिर के एक आदमी ने हमसे बयान किया कि उन्होंने आप (सल्ल0) से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। आप उस समय घर में बैठे थे। पूछा कि क्या मैं आऊँ? आपने अपने सेवक से कहा कि उनके पास जाओ और उनको इजाज़त का तरीक़ा बताओ। उनसे कहो कि इजाज़त इस तरह माँगे "अस्सलामु अलैकुम" क्या मैं अन्दर आ जाऊँ? उन्होंने हुज़ूर सल्ल0 का फरमान सुन लिया तो कहा 'अस्सलामु अलैकुम" क्या मैं अन्दर आ जाऊँ? आप ने इजाज़त दी तो वह अन्दर आ गए। (अबूदाऊद)

हज़रत किल्दता बिन हम्बल रज़ि0 से रिवायत है कि मैं हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की खिदमत में बग़ैर सलाम किये हाज़िर हो गया। आप (सल्ल0) ने फरमाया वापस जाओ ये कहो "अस्सलामु अलैकुम" क्या मैं आऊँ। अबूदाऊद—तिर्मिज़ी)

आज्ञा मांगने वाले से जब पूछा जाए तो नाम या उपनाम बताए

हज़रत अनस रज़ि0 से मेराज वाली मशहूर रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि हज़रत जिब्रील अ0 मुझे पहले आसमान पर ले गए और दरवाज़ा खुलवाया और आवाज आई कौन? कहा, मैं हुँ जिब्रील! पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है? कहा मुहम्मद सल्ल0। फिर दूसरे आसमान पर पहुँचे और दरवाज़ा खुलवाया और आवाज आई कौन? कहा, मैं हुँ जिब्रील! पूछा गया तुम्हारे साथ कौन है? कहा मुहम्मद सल्ल0। इसी तरह तीसरे चौथे यहाँ तक कि सातवें आसमान तक ले गए और हर दरवाज़े पर सवाल होता था कि तुम कौन हो? और वह कहते थे कि मैं जिब्रील हुँ।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबूज़र रज़ि0 से रिवायत है कि मैं एक दिन निकला। आप सल्ल0 अकेले टहल रहे थे। मैं भी चाँद के साये में चलने लगा। आप मेरी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया कौन? मैंने कहा अबूज़र।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत उम्मेहानी रज़ि0 से रिवायत है कि मैं आप (सल्ल0) की सेवा में उपस्थित हुई, आप (सल्ल0) नहा रहे थे और हज़रत फातिमा रज़ि0 पर्दा किये हुई थीं। आप (सल्ल0) ने पूछा कौन? मैंने कहा उम्मेहानी। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि मैं हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पास आया और दरवाज़ा खटखटाया। आप (सल्ल0) ने पूछा कौन? मैंने कहा "मैं"[1] आप (सल्ल0) आप सल्ल0 ने कहा "मैं, मैं" (आप सल्ल0 ने मैं को नापसन्द फरमाया।

(बुखारी–मुस्लिम)

छींक का जवाब देना–

छींक की दुआ और उसका जवाब–

हज़र अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह छींक को पसन्द फरमाता है और जम्हाई को नापसन्द करता है, तो जब किसी को छींक आए और वह "अल्हम्दुलिल्लाह" कहे तो हर मुसलमान पर जो उसको सुने लाज़िम है कि "यरहमुकल्लाह" कहे और जम्हाई शैतान की तरफ से है कि जब जम्हाई आए तो जहाँ तक हो सके रोको। इसलिए कि जो कोई जम्हाई लेता है तो शैतान उसके अन्दर से हँसता है। (बुखारी)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जब किसी को छींक आये तो वह "अल्हम्दुलिल्लाह" कहे और उसका भाई या साथी जवाब में "यरहमुकल्लाह" कहे तो फिर वह जवाब में यह्दीकुमुल्लाह व युस्लिहु बालकुम[1] कहे। (बुखारी)

हज़रत अबूमूसा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को फरमाते सुना है कि जब किसी को छींक आए और वह "अल्हम्दुलिल्लाह" कहे तो "यरहमुकल्लाह" कहो। और अगर वह "अल्हम्दुलिल्लाह न कहे तो तुम भी जवाब न दो।

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के सामने दो आदमियों को छींक आई। आप ने एक की छींक का जवाब दिया और दूसरे की छींक का जवाब न दिया। उसने पूछा कि आपने मेरी छींक का जवाब नहीं दिया ? आप (सल्ल0) ने फरमाया उसने "अल्हम्दु–लिल्लाह" कहा था ? तुमने नहीं कहा। (मुस्लिम)

छींक आये तो मुँह पर हाथ या कपड़ा रख ले–

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को छींक आती तो आप (सल्ल0) अपना पवित्र हाथ या कपड़ा अपने पवित्र चेहरे पर आवाज़ दबाने के लिए रख लेते थे।

(तिर्मिज़ी

गैर मुस्लिम की छींक का जवाब

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 से रिवायत है कि यहूदी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के सामने इस उम्मीद से छींकते थे कि आप (सल्ल0) जवाब में "यरहमुकल्लाह" कहें, लेकिन आप (सल्ल0) यह्दीकुमुल्लाह व युस्लिहु बालकुम" ही कहते थे। (अबूदाऊद

हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जब किसी को जम्हाई आए तो जम्हाई रोकने के लिए हाथ मुँह पर रख ले, इसलिए कि शैतान मुँह में दाखिल हो जाता है। (मुस्लिम)

अनुरोध

पाठक गण लेखक जनों से अनुरोध करते हैं कि वे सच्चा राही को और सरल करें।

धन्यवाद

1. अर्थात "मैं" क्या चीज है, अपना नाम या उपनाम बताना चाहिए। मैं से पहचाना नहीं जा सकता और नाम बताने से साफ मालूम हो जाता है।

1. अल्लाह तुमको हिदायत दे और तुम्हारी हालत दुरुस्त फरमाए।

मुसलमानों में ज़ात पात

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

"बेशक जो लोग ईमान लाये और भले काम किये वह अल्लाह की मखलूक़ में सबसे अच्छे लोग हैं। उनका बदला उनके रब के पास बाग़ात हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह सब उसके लिए है जो अपने रब से डरता है"।

(सूरः बयिय्यनः न0 98 आखिरी आयतें)

यह आयतों का मफहूम है, इस मफहूम में कुर्आन मजीद में बहुत सी आयतें हैं। इस से यह मालूम हुआ कि अल्लाह की मखलूक में सबसे अच्छा वह है जो ईमान लाये यानी अल्लाह के आखिरी रसूल ने जो कुछ बताया है और जो कुछ वह अल्लाह की तरफ से लाये हैं सबको मान ले। आप (सल्ल0) ने जो पैगाम पहुँचाया है उसमें से किसी एक बात को भी अगर कोई न माने तो वह ईमान वाला नहीं हो सकता। वैसे आप (सल्ल0) ने इख्तिसार से भी बता दिया है कि ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, कियामत के दिन पर और उसकी तक्दीर पर, अच्छी हो या बुरी सब उसी की तरफ से है। रहे भले काम तो भले काम वही हैं जिन को नबी सल्ल0 ने करने का हुक्म दिया और बुरे काम वह हैं जिनको आप (सल्ल0) ने करने से रोक दिया। बस इस्लाम में सबसे अच्छा वही है जो ईमान लाया और भले काम किये।

लेकिन हम देखते हैं कि इस्लाम लाने वालों में यानी मुसलमानों में भी ज़ात पात और ऊँच नीच मौजूद हैं जिन की गिन्ती मुश्किल है। सय्यद, कहलाने वालों में हसनी, हुसैनी, हाशमी, अब्बासी, अलवी वगैरह, शैख कहलाने वालों में सिद्दीक़ी, फारूक़ी, उस्मानी वगैरह। बाज़ कबाइल से मन्सूब हैं जैसे अन्सारी, कुरैशी, अय्यूबी, मुगल पठान वगैरह, फिर पेशों से मन्सूब तो इतनी जातें हैं कि उनका अहाता करना मुश्किल है जैसे जुलाहे (बुनकर) तेली, दरज़ी, धुन्या, मनिहार, धोबी वगैरह।

पेशे वाले काम मुआशरे की ज़रूरियात पूरी करने के लिये हैं और सभी पेशे जरूरी हैं, किसी एक पेशे का काम रुक जाए तो मुआशरे में बड़ी मुश्किल पैदा हो जाए। लेकिन बड़े अफसोस की बात यह हुई कि बाज पेशे वालों को नीच समझा जाने लगा जिसकी इस्लाम में गुंजाइश नहीं, लेकिन क्या किया जाए कि यह ऊँच–नींच आज भी इस्लामी मुआशरे में मौजूद है। अगरचे बहुत से पेशो ने इस तरक्की के दौर में तरक्की कर ली है, जैसे कपड़ा बुनना कि अब करघों के बजाए पावर लूम हो गये और मिलें हो गईं। आप जाइज़ा लें तो अब सिर्फ जुलाहा कहलाने वाले नहीं बल्कि कितने सय्यद और शैख़ कपड़ा बुन रहे हैं। तेल निकालने की मशीनें ईजाद हुई तो अब सिर्फ तेली ही नहीं बल्कि शैख़–सय्यद और पठानों ने भी तेल निकालने का पेशा अपना रखा है। हाँ दूसरे का कपड़ा धोना जरूर गिरा हुआ काम है, लेकिन क्या मुआशरे में इसकी जरूरत नहीं है? अवश्य जरूरत है, फिर बेचारे मुआशरे की इस जरूरत को पूरी करने वाला घटिया क्यों समझा जाए, लेकिन आज इस पेशे ने भी तरक्की की है और शरीफ

कहलाने वालों ने लॉंड्रियाँ लगा रखी हैं और मशीनों के जरिये कपड़ों की धुलाई करते हैं। रूई धुन्ने का काम पहले सिर्फ धुन्या करता था मगर आज मशीनों से रूई धुनाई का काम सभी करते हैं, और धुन्या नहीं कहलाते। हज्जाम (नाई) के पेशे ने भी तरक्की की है लेकिन अभी हमारे मुल्क में इस पेशे को दूसरों ने नहीं अपनाया है, लेकिन क्या इस पेशे से मुक्ति सम्भव है ? अगर हज्जाम लोग अपना पेशा छोड़ दें तो कितनी मुश्किलात आएं। इसी तरह गोश्त बेचने के पेशे ने तरक्की की है मगर इस पेशे को भी दूसरों ने नहीं अपनाया है, लेकिन सोचें अगर इस पेशे वाले अपना पेशा छोड़ दें तो मुआशरे का क्या हाल हो?। अल्लाह तआला फरमाता है:

"ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम में शुऊब और कबीले (गोत्र) बनाए ताकि तुम में एक दूसरे की पहचान हो सके, बेशक तुम में अल्लाह के नजदीक सबसे अच्छा वह है जो सब से जियादा तक्वे वाला (संयमी) है"।(सूर–ए–हुजरात आयत 13) यह आयत का मफहूम है।

इससे मालूम हुआ कि कबीलों और खानदानों की तक्सीम, चाहे वह पेशों से ही क्यों न मन्सूब हो बुरी नहीं है कि यह तो अल्लाह तआला की तरफ से है, लेकिन अपने को सय्यद, शैख समझते हुए ईमान व आमाले सालेहा में कोताही करना और इसी तरह अपने पेशे में ऐसा लग जाना कि ईमान की बातों को पीछे कर दें और नबी सल्ल0 के लाये हुए भले कामों की कोई परवाह न करें तो यह बड़े घाटे की बात है। साथ ही तमाम दीनदारों के लिये यह जरूरी है कि जिस शख्स में ईमान और तक्वा हो वह चाहे जिस पेशे वाला और खानदान का हो उसे कम दर्जे का न समझें क्योंकि यह हराम है। रही बात शादी वगैरह की तो अगर कोई खानदान का लिहाज करता है तो यह ऐब की बात नहीं, कि कबाइल की बका भी दीन में मक्सूद है और अगर बाहमी रजामन्दी से दूसरे खानदान में शादी हो गई है तो यह भी बुरा नहीं कि सब दादा आदम अ0 की औलाद हैं। बस यह बात न भूलें कि किसी मुत्तकी परहेज़गार को उसके खानदान या पेशे के सबब कम दर्जे का समझ कर अपनी आखिरत न बिगाड़ें। अल्लाह तआला हम सब को अपनी पसन्दीदा राह पर चलाए।

आमीन!

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

(सीरिया) की ओर चले। जंगल में उनके खेमे फट गए, इस पर अल्लाह ने जब सूरज की गर्मी तेज हुई तो बादल को उनका साया करने का आदेश दिया और जब अनाज न रहा तो मन व सलवा खाने के लिए उतारा। "मन" एक मीठी चीज़ थी, धनिये के दाने जैसी, जो रात को ओस (शबनम) के साथ बरसती, और उसके बरसने से लश्कर के खेमें के आस पास ढेर लग जाता। सवेरे हर एक अपनी इच्छानुसार उठा लेता। और "सलवा" एक परिन्दा है जिसको बटेर कहते हैं, शाम को लश्कर के इर्द–गिर्द हज़ारों जमा हो जाते। अन्धेरा होते ही पकड़ लेते और कबाब बना कर खाते। मुद्दतों यही खाया।

6. अर्थात इस लज़ीज़ खाने को खाओ और उस पर आश्रित रहो, और आगे के लिये ज़खीरा जमा करके न रखो और न दूसरी गिज़ा (आहार) से मुबादला (परिवर्तन) की इच्छा करो।

7. सबसे पहले अत्याचार तो यह किया कि ज़खीरा करके रखा तो गोश्त सड़ना शुरु हो गया, दूसरे चीज़ों से बदलना चाहा अर्थात मसूर, गेहूँ, ककड़ी, प्याज़ आदि से तो इसके कारण वह अनेक कष्ट व कठिनाईयों में डूबने लगे।

❑❑

जननायक

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी –अनु0: मुहम्मद गुफरान नदवी

सफ़ा पहाड़ पर एलाने आम– तीन साल तक हुजूर सल्ल0 शख़्सी (व्यक्तिगत) और मुक़ामी (स्थानीय) तरीक़े से दअ़वत देते रहे, फिर हुक्म हुआ कि उठो और खुलकर दअ़वत दो (या अय्यूहल मुद्दस्सिर कुम फ़अन्ज़िर) "ऐ चादर के कपड़े पहने हुए शख़्स उठो, और लोगों को ग़लत बातों के अन्जाम से डराओ" चुनांचि आपने खुलकर दअ़वत देना शुरु कर दिया, आप (सल्ल0) ने "काबा" के सामने के एक छोटे पहाड़ "सफ़ा" पर चढ़ कर हंगामी (इमरजेंसी) हालात में लोगों को जमा करके अहम ख़बर सुनाने का जो तरीक़ा था, के मुताबिक़ आवाज़ लगाई, सब पहाड़ के सामने जमा हो गए, आपने उनसे कहा कि "अगर मैं यह बताऊँ कि पहाड़ के पीछे जो मेरी नज़र में है, दुश्मन हमला (आक्रमण) के लिए आ रहा है तो तुम मेरी बात मानोगे"? लोगों ने कहा क्यों नही, तुम उस तरफ़ देख रहे हो, हम नहीं देख रहे हैं, आपने फ़रमाया: "तो सुन लो, मैं तुमको तुम्हारी दूसरी ज़िन्दगी में जिसका इल्म मुझे ख़ुदा की तरफ़ से दिया गया है, सख़्त अज़ाब के पेश आने के ख़तरे से आगाह करता हूँ"। यह सुनकर कई लोग बहुत सख़्त गुस्से में आ गए और कहने लगे: क्या इसके लिए तुमने हम सबको जमा किया, और बुरा भला कहा, और इसमें आपका एक चचा अबूलहब और क़ुरैश का एक दूसरा लीडर अबूजहल पेश–पेश था और सख़्त बात कही, इसके बअ़द ही क़ौम के ज़िद्दी और राहे हक़ (सच्चाई के मार्ग) से भटके लोगों ने आप सल्ल0 की मुख़ालिफत (विरोध) शुरु कर दी और आपके ख़िलाफ दुश्मनी का माहौल बनाने लगे, और इस तरीक़े से एक ख़ामोश जंग शुरु हो गई जो एक तरफ़ा थी[1], क्योंकि आप (सल्ल0) को इस दुश्मनी और मुख़ालिफ़त को सब्र के साथ बर्दाश्त करने का हुक्म अल्लाह की तरफ़ से दिया गया, ताकि क़ौम दअ़वते हक़ को मुल्कगीरी या लीडरी हासिल करने की बात न समझे, बल्कि इस्लाह (सुधार) और अपने रब और ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की ताबेदारी की तलक़ीन (उपदेश) समझे, क्योंकि मुल्कगीरी और सियासत में अवाम की पसन्द की बात कही जाती है ताकि वह साथ दें लेकिन "दअ़वत" में हक़ की बात कही जाती है चाहे सब मुख़ालिफ़ हो जाएं, असली हमदर्दी और सहानुभूति क़ौम को भले–बुरे से वाक़िफ़ (जानकारी) करने में है, लेकिन आपकी बात पर गौर न करने की वजह से आपके ख़िलाफ़ एक तरफ़ा जंग की कैफ़ियत इख़्तियार कर ली गई है।

हुजूर सल्ल0 की तरफ़ से इस्लाह (सुधार) व उपदेश का निरन्तर अमल– इसके बअ़द से नबी करीम सल्ल0 ने सबको आम तौर पर समझाना शुरु किया, हर एक मेले में जहाँ बात करने का मौक़ा होता जा–जा कर लोगों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की ख़ूबी बताते, अच्छे अमल की तलक़ीन करते, बुराइयों से, जुल्म से और बेहयाई की बातों से रोकते, बुतों, पत्थरों और दरख़्तों की पूजा को गलत, बेफ़ाइदा और गुनाह की

शेष पृष्ठ ..... 12 पर

1. तफ़सील के लिए देखें सहीबुख़ारी व मुस्लिम, तब्क़ात इब्नसअ़द:1/200 अलकामिल फ़ित्तारीख़: 2/60, फ़तहुलवारी:8/503।

हिदायत की किताब

–बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने हर ज़माने में अपने बन्दों की हिदायत के लिये पैग़म्बर भेजे, उन पर आसमानी किताबें उतारीं ताकि उनकी रौशनी में इन्सानों को सही रास्ता मिल सके, आखिरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0, आखिरी किताब कुर्आन मजीद लेकर सारी दुनिया की रहनुमाई के लिये तशरीफ़ लाये, कुर्आन मजीद में कई जगहों पर खुद हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बारे में आता है कि आपको पूरी दुनिया के लिये रसूल बनाकर भेजा गया, एक जगह इरशाद है : (अनुवाद– और हमने आपको तमाम लोगों के लिये बशीर व नज़ीर बनाकर भेजा है)। मानने वालों के लिये बशारत है और न मानने वालों को दोज़ख की आग से ख़बरदार किया गया है।

जिस तरह आप सल्ल0 को पूरी दुनिया के लिये भेजा गया उसी तरह आप पर जो किताब उतारी गयी है वो तमाम लोगों की हिदायत के लिये उतारी गयी है इसीलिये इसको (हुदल्लिन्नास) खुद कुर्आन मजीद में कहा गया है, ये सभी लोगों के लिए हिदायत है, सच्चा और सीधा रास्ता बताने वाली किताब है, लेकिन इससे फ़ाएदा वही लोग हासिल करते हैं जो अपने पैदा करने वाले को पहचानते हैं। उससे डरते हैं, और परहेज़गारी की ज़िन्दगी अपनाते हैं। इसी कुर्आन मजीद में कहा गया है: (अनुवाद–ये किताब हिदायत है परहेज़गारों के लिये)।

वास्तव में ये किताब दुनिया के सभी लोगों को सम्बोधित करती है, और उनको सही रास्ता बताती है, लेकिन वास्तव में इससे फ़ाएदा वही लोग उठाते हैं जो फ़ाएदा उठाना चाहते हैं। और जिनके अन्दर ज़िद और हठधर्मी होती है उनके बारे में कुर्आन मजीद में विभिन्न जगहों पर ये कहा गया है कि "फिर उनके बारे में गुमराही का फैसला कर दिया जाता है"।

वर्तमान युग में बहुत से लोगों को ये ग़लत फ़हमी है कि ये मुसलमानों की किताब है जब कि वास्तव में ये तमाम इन्सानों की किताब है, हर एक को मुख़ातब करती है और फ़ाएदा उठाने का रास्ता बताती है।

और ये बात गुज़र चुकी है कि ये किताब सभी की हिदायत के लिये उतरी है लेकिन इससे हिदायत हासिल वही लोग करते हैं जो परहेज़गार और मुत्तकी हों। सूरह बक़रह में जो कुर्आन मजीद की सबसे लम्बी पहले पारे की पहली सूरत है, उसमें लोगों को तक़वा व परहेज़गारी अपनाने और खुदा से डरने का नुस्ख़ा बताया गया है ताकि अमली तौर पर इससे हिदायत के रास्ते खुलते जाएं और उसका फ़ाएदा आम हो। इसी आयत में तमाम लोगों को उमूमियत के साथ ख़िताब करके इरशाद होता है:

(अनुवाद– ऐ लोगो! अपने उस परवरदिगार की बन्दगी करो जिसने तुमको भी पैदा किया और उन लोगों को भी पैदा किया जो तुमसे पहले हुए हैं ताकि तुम मुत्तकी बन जाओ) जब मारफ़त होती है तो आदमी झुकता है। इन्सान जब अपने ख़ालिक़ को पहचानता है तो उसके आगे सर झुका देता है। और तक़वा बन्दगी का उच्चतम स्तर है। पहला चक्र मारफ़त का है। किसी भी चीज़ का लिहाज़ उसी समय होता है जब उसकी पहचान होती है। वाक़्या मशहूर है कि एक बार निज़ाम हैदराबाद भेष बदल कर रियासत का दौरा करने निकले, रात का समय था, एक तांगा किराये पर किया, रास्ते में तांगे वाले से बातें शुरु की, वो बेतकल्लुफ बातें करने लगा, निज़ाम

के बारे में और रियासत के हाल चाल के बारे में पूछा, वो दिलजला था, उसने दिल के फफोले फोड़े और खूब खरी खोटी सुनाई, निज़ाम सुनते रहे, जब उतरने का समय हुआ तो उसने पैसा गिन्ने के लिये माचिस जलाई, निज़ाम के चेहरे पर नज़र पड़ते ही बेहोश हो गया, जब तक उसने पहचाना नही सब कुछ सुनाता रहा, जब पहचाना तो पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गयी, ये बात मानव प्रकृति में है, जब तक पहचान न हो उस समय तक लिहाज़ नही पैदा होता, ख़ालिक़–ए–कायनात ने जो इन्सान की नफ़्सियात का भी ख़ालिक़ है इसलिये कहा कि अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको भी पैदा किया और तुमसे पहले वालों को भी पैदा किया।

इन्सान ग़ौर करे कि उसकी हक़ीक़त क्या है? कैसे उसका वजूद हुआ? एक नापाक क़तरा कहाँ से कहाँ पहुँचा? अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में उसकी तफ़सील जिस तरह बयान फ़रमाई है वो बजाए खुद क़ुर्आन मजीद का एक चमत्कार है। (अनुवाद– और हमने इन्सान को मिट्टी के खुलासा से पैदा किया और फिर उसको एक मज़बूत जगह नुत्फ़ा बना कर रखा और फिर नुत्फ़ा का लोथड़ा बनाया फिर लोथड़े की बोटी बनाई फिर लोथडे की हड्डी बनायी फिर हड्डी पर गोश्त चढ़ाया फिर उसको एक दूसरी ही मख़लूक़ बना कर खड़ा कर दिया, पस वो अल्लाह बरकत वाला है जो सबसे बेहतर वजूद बख़्शने वाला है।)

जिसने सबसे पहले आदम का मिट्टी का पुतला पैदा किया, उसमें रूह फूँकी फिर उन्हीं से उनका जोड़ा बनाया, और फिर उन दोनों से इस दुनिया को मर्द औरतों से आबाद किया। माँ के पेट में बच्चे की बढ़ोत्तरी उस ख़ालिक़ ही की कुदरत का दृश्य है। और क़ुर्आन मजीद ने इसकी जो तफ़सील चौदह सौ साल पहले बयान की वो उसका एक चमत्कार है। एक यही चीज़ उस पैदा करने वाले की तारीफ़ के लिये काफ़ी है।

जिस ज़ात ने पैदा किया, बेहतर शक़्ल अता फ़रमायी, सारी ज़रूरतें पूरी की, नदियां बहायीं, पहाड़ बनायें ताकि ज़मीन अपने केन्द्र पर स्थापित रहे, ऐसे भूकम्प न आयें कि उसमें इन्सानों का वजूद मुश्किल हो जाए। सूरज, चांद और दूसरे ग्रहों से उसकी संतुलित दूरी रखी ताकि वो आपस में टकराकर तबाह न हों, और उस समय तक पूरी व्यवस्था चलती रहेगी जब तक उसका फैसला नही आ जाता। जब एक इन्साफ़ पसन्द अक़्ल रखने वाला इन्सान इस पर ग़ौर करता है तो अपने आप उसकी ज़बान से निकलता है: (तेरी ज़ात पाक है तूने ये सब कुछ यूं ही नही पैदा कर दिया)।

तमाम इन्सानों को सम्बोधित करके यही वास्तविकता याद दिलायी जा रही है कि जिस माबूद ने तुमको पैदा किया और तुमसे पहले वालों को भी पैदा किया, वही बन्दगी के लायक़ है, केवल उसी की इबादत की जाए, उसी के आगे सर झुकाया जाए, उसी से मांगा जाए, उसकी मिसाल साधारण बादशाहों की तरह नही कि उसने अपने मददगार और अपने वज़ीर बना लिये हों, वो अकेला सब कुछ करता है। सब कुछ उसी के हाथ में है तो बस उसी को आवश्यकता की पूर्ति करने वाला समझा जाए।

बन्दगी और तारीफ़ से तक़वा की शान पैदा होती है और तक़वा क़ुर्आन मजीद को समझने के दरवाज़ों को खोलता है। यही (हुदल्लिलमुत्तक़ीन) का राज़ है, जो जितना अधिक लिहाज़ करेगा, उतना ही वो मानेगा, जबकि तक़वा की पहली मंज़िल *शिर्क* से बचना है। अमली तौर पर इस "किताब–ए–हिदायत" से हिदायत का आग़ाज उसी समय होता है जब एक इन्सान अपने ख़ालिक़ व

शेष पृष्ठ .....20 पर

बुज़ुर्गों से फ़ाएदा कैसे हासिल किया जाए ?

—मौलाना नज़रुल हफ़ीज़ नदवी

एक महफ़िल में हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0 से सवाल किया गया कि लोग बुज़ुर्गो की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं लेकिन इस बात से अनजान होते हैं कि हाज़िर होने के क्या आदाब हैं? उनसे कैसे लाभान्वित होना चाहिए।

हज़रत मौलाना ने फरमाया कि बुज़ुगों की ख़िदमत में जब जाएं तो अपने को ज़रूरतमन्द महसूस करें, लाभान्वित होने की नियत से जाएं, सम्मान और अक़ीदत से जाएं, उनके कामों को ग़ौर से देखें, उनकी नशिस्त व बर्खास्त को ग़ौर से देखें और बातचीत के उतार–चढ़ाव पर निगाह रखें कि इससे अल्लाह तआला की याद आती है, और उसके ज़िक्र की तरग़ीब होती है। खुद कोई सवाल न करें बल्कि अगर ये देखिये कि पीर ख़ामोश है तो उसकी ख़ामोशी भी उसके लिये लाभदायक होती है। उसके दिल का असर माहौल पर पड़ता है। अगर वो कुछ कहे तो उसे ग़ौर से सुने और उस पर अमल करने की कोशिश करें।

ऐसे भी लोग होते हैं जो बुज़ुर्गों की मजलिसों में अपनी जानकारी को प्रकट करते हैं या उन बातों को छेड़ते हैं जो रोज़मर्रा की राजनीतिक बातें होती हैं और अख़बारों से मालूम हो जाती हैं। कई लोग अपनी क़ाबिलियत को बहुत अधिक प्रकट करते हैं, हालांकि बुज़ुर्गों की महफ़िल में हाज़िरी का मक़सद लाभ प्राप्त करना होना चाहिए न कि अपने व्यक्तित्व को प्रकट करना। अगर कोई सवाल करे भी तो इस नियत से कि वहां उपस्थित लोगों को इससे फ़ाएदा हो और उस सवाल का सम्बन्ध इस बुज़ुर्ग के विषय और विशेषता से हो यानि अगर कोई इस्लामी शरीअत का विद्वान हो तो उससे सियासी सवाल न करे, अगर हदीस का जानने वाला हो तो उससे शायरी की बातें न करें उस बुज़ुर्ग का मैदान और क्षेत्र जो हो उससे सम्बन्धित सवाल करे।

बुज़ुर्गों के यहां इसका कोई महत्व नही कि उनकी बातों से कोई प्रभावित होता है या नहीं, वो तो वास्तविकता की बातें करते हैं चाहे कोई प्रभावित हो या न हो, हज़रत रायपुरी रह0 की महफ़िल में हमने ये देखा, खास तौर से रावलपिण्डी पाकिस्तान में क़याम के मौक़े पर हज़रत से सम्बन्ध रखने वाले अपने फ़ौजी दोस्तों और आला अफ़सरों को लाते थे ताकि वो हज़रत से लाभ प्राप्त कर सकें। कई बार पूरी मजलिस ख़ामोशी की गुज़र जाती थी, कभी अगर हम लोगों में से कोई सवाल करता तो उसको हम ही में से किसी आलिम की ओर भेज देते। हज़रत रह0 को इसकी कोई परवाह नही होती कि कोई अक़ीदत वाला हुआ या नही, और वो दोबारा आता है या नही। हज़रत रायपुरी रह0 की ख़िदमत में बड़े–बड़े क़ायदीन और चोटी के समाजी व सियासी कार्यकर्ता और उलमा आते थे। जैसे मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी रह0, मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी रह0 वग़ैरह लेकिन ये सब हज़रत से लाभ प्राप्त करने की नियत से आते थे।

फ़िर हज़रत ने दमिश्क़ के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग शैख़ हारून की चर्चा करते हुए फ़रमाया कि क़याम–ए–दमिश्क़ के दौरान एक रोज़ उनकी महफ़िल में हाज़िरी की नियत से निकला, जब वहां हाज़िर हुआ तो देखा कि एक बुज़ुर्ग बैठे हुए हैं और उनके चारों तरफ़ खुशहाल वर्ग के लोग जिनका सम्बन्ध विभिन्न वर्गों से था उपस्थित हैं। सब बातें कर

े हैं, वो बुजुर्ग ख़ामोश हैं, किसी
.; पर वो कभी मुस्करा देते हैं।
म जब हाज़िर हुए तो किसी ने
ारा परिचय करवाया, उन्होंने
छ कहने की फ़रमाइश की, हमने
हा कि हम तो सुनने के लिये
और लाभ प्राप्त करने की नियत
से हाज़िर हुए हैं। लेकिन जब
उन्होंने ज़ोर दिया तो हम ने एक
हानी से अपनी बात शुरु की
ो हमने कलीला दिमना में पढ़ी
ी, हमने कहा कि आपको एक
कहानी सुनाता हूँ "एक शख़्स को
कहीं से एक क़ीमती मोती हाथ
आ गया, किसी ने उसको बताया
कि अगर मोतियों का माहिर इसमें
सुराख़ कर दे तो इसकी क़ीमत
बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी, इसलिये
उस माहिर को लाया गया, मोती
का मालिक बड़ा बातूनी था, उसने
मोती के सुराख़ करने वाले से
पूछा कि तुमको इसके अलावा और
कौन–कौन से काम आते हैं? उसने
कई काम गिनाए। जब उससे पूछा
या कि तुमको गाना भी आता
? तो उसने कहा हाँ, उसने गाने
ी फ़रमाइश की, और शाम तक
ाना सुनता रहा, शाम के समय
सने अपनी मज़दूरी मांगी तो
ालिक ने कहा मज़दूरी कैसी?
तुमने तो अस्ल काम किया ही
नही! उसने जवाब में कहा कि
अस्ल तो वक़्त की क़ीमत है, हमसे
बजाए मोतियों में सुराख़ कराने
के आपने गाना सुना, इसलिए
हमारी फ़ीस तो देनी होगी!
इसलिये वो फ़ीस दी गयी, ये
कहानी सुनाकर हमने कहा कि
हमारा भी हाल कहीं ऐसा न हो
जाए कि हम इस मकसद से आयें
हैं कि बुजुर्ग से लाभ प्राप्त करें
लेकिन खुद अपनी ही सुनाते रहें,
ऐसा न हो कि अल्लाह के यहाँ
पूछा जाए कि तुम लोग बुजुर्गों से
लाभ प्राप्त करने के लिये गये थे
और अपनी ही सुनाते रहे!!

❖❖❖

जगनायक.....

बात क़रार देते, आप लोगों को
तलक़ीन (उपदेश) फ़रगाते कि
ख़ुदा की ज़ात को हर नक़्स (दोष)
से, हर ऐब से, और हर बुराई से
पाक समझें, इस बात का पुख़्ता
एतिक़ाद (विश्वास) रखें कि ज़मीन
व आसमान, चाँद सूरज छोटे, बड़े
सब के सब ख़ुदा के पैदा किये
हुए हैं, सब उसी के मोहताज हैं.
दुआ का क़ुबूल करना, बीमार को
सेहत व तन्दुरुस्ती देना, मुरादें
पूरी करना अल्लाह के इख़्तियार
में है, अल्लाह की मर्ज़ी व हुक्म
के बग़ैर कोई भी कुछ नहीं कर
सकता, फ़रिश्ते और नबी भी उसके
हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते,
अरब में उक्काज़, उवैना और
जिलमजाज के मेले बहुत मशहूर
थे, दूर–दूर से लोग वहां आया
करते थे, नबी करीम सल्ल० उन
मुक़ामात पर जाते और मेले में
आए हुए लोगों को इस्लाम की
और तौहीद की दअवत फ़रमाया
करते थे। क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान
मन्सूरपुरी रह० लिखते हैं: "नबी
सल्ल० हर रोज़ इस काम में
लगे रहते थे, मक्का के हर एक
मजमअ (जनसमूह) में हुज़ूरे
अकरम सल्ल० पहुँचते थे और
क़ुर्आन सुनाते थे, हर शख़्स से
तन्हाई में मिलते थे और उसे
पैग़ामे इलाही पहुँचाते थे।

मक्का की आबादी से बाहर
भी जितने रास्ते आने–जाने वालों
के थे, उन सब पर दिन की रौशनी
और रात की तारीकी में हुज़ूर
सल्ल० जा पहुँचते थे, और क़ुर्आन
की तिलावत से आने–जाने वालों
के कानों में हुक्मे इलाही डालते
थे, अरब की कोई मशहूर मण्डी
और मशहूर मेला ऐसा न होता
था जहाँ हुज़ूर सल्ल० न पहुँचते
हों और दीन की तलक़ीन बज़रिये
तिलावत और इशाअत (प्रचार)
बज़रिये दअवत न फ़रमाई हो,
उक्काज़ का ज़र्रह–ज़र्रह और
ताएफ़ का पत्ता–पत्ता हुज़ूर सल्ल०
की तिलावत का गवाह है।

❖❖❖

आखिरी किस्त

स्वयं को पहचानिये अन्यथा भारविहीन हो जाएंगे

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

अनु0— नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

वज़नदार बनने की विधि और उस के चिन्ह (अलामत) : अब मैं तनिक विभिन्न शैली में निवेदन करता हुँ कि एक तो सीधी बात ये हे कि कुर्आन से जुड़ जाएं और कुर्आन वालों से अपना सम्बन्ध जोड़ लें। उनके सानिध्य में समय व्यतीत करें। उसके बाद यदि आप कुर्आन को और देखें तो आपको मालूम होगा कि अल्लाह ने आपको वज़नदार बनाने के लिए कुछ नुस्खे बताए हैं। जैसे कि आप ये चाहते हैं कि आपका ज्ञान बढ़े तो रसूख पैदा करना पड़ेगा और रसूख वाले व्यक्ति को कभी संकोच नहीं होता। ये निशानी उसकी है कि ये व्यक्ति ज्ञान में परिपक्व है। और आजकल ज्ञान ही समाप्त होता चला जा रहा है। जिनको कुर्आन में "अर्रासिखून फिल् इल्म" अर्थात जिन्हें ज्ञानी कहा गया वह आजकल समाप्ति के कगार पर पहुँचते जा रहे हैं। रसूख कहते हैं ईश्वरीय भय को, विनम्रता को, कर्म को और ज्ञान की गहराई को। जब ये चीज़ें पैदा होती है तो परिपक्वता (रसूख) पैदा होता है। और जब आदमी रसूख वाला होता है तो फिर उसको कहीं कोई शक नज़र नहीं आता। इसलिए कुर्आन में कहा गया है कि कुर्आन के बारे में तनिक भी शक (सन्देह) नहीं। अनुवाद— "यदि तुम भ्रम में हो इस वाणी से जो उतारा हमने अपने बन्दे पर तो ले आओ एक सूरः इस जैसी और बुलाओ उसको जो तुम्हारा मददगार हो अल्लाह के अतिरिक्त, यदि तुम सच्चे हों"। जितना रसूख पैदा होगा उतना ही वज़न पैदा होगा। इसी प्रकार आप मज़हबी कानून का ज्ञान प्राप्त कर लें तो ये भी उसके अन्दर वज़न पैदा करेगा। इसीलिए जब अल्लाह किसी के साथ भलाई करना चाहता है तो धर्म (दीन) की समझ देता है।

बहरहाल अल्लाह ने बुलन्द करने के लिए ये तमाम चीज़ें दी हैं, तो स्पष्ट है कि उन सभी चीज़ों के साथ वज़न पैदा करने के लिए अल्लाह ने इशारे कर दिये हैं, जैसे कुर्आन में कहा गया है कि "पढ़िये **अपने रब के नाम** से जिसने सबको पैदा किया"। सबसे पहले आदेश दिया गया है कि यदि आप को वज़नदार बनना है और बहुमूल्य बनना है तो आप को ज्ञान के क्षेत्र में आना पड़ेगा और ज्ञान के क्षेत्र में कैसे आएंगे? तो इसके लिए पढ़िये हर उस चीज़ को, जो पढ़ने की है। लेकिन वज़न कैसे पैदा होगा? अल्लाह के नाम से, इसलिए कि हदीस में आता है कि यदि कल्मा का पर्चा एक पलड़े में रख दिया जाए और आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है, सबको एक पलड़े में रख दिया जाए तो कल्मा वाला पलड़ा झुक जाएगा। अल्लाह के नाम का वज़न इतना है कि कोई चीज़ उसके सामने ठहर ही नहीं सकती। स्पष्ट है कि जब अल्लाह के नाम से आप पढ़ना शुरु करेंगे तो वज़न भी बढ़ना शुरु हो जाएगा और वज़न बढ़ता चला जाएगा। यदि अल्लाह के नाम के साथ उसकी बरकतों, उसके आलोक के साथ आप ज्ञान प्राप्त करेंगे, शिक्षा प्राप्त करेंगे तो बरकत ही बरकत, वज़न पर वज़न पैदा होता चला जाएगा यहां तक कि सबसे ऊँचा स्थान आपका होगा।

ईश्दौत्य (नुबूवत) भी ज्ञान से हीं सम्बद्ध है, जिसके सम्बन्ध में कुर्आन में बहुत सी आयतें हैं। इसीलिए हर सन्देष्टा (रसूल) अपने दौर का सबसे बड़ा ज्ञानी होता है। वह सबसे ऊँचा, वज़नदार और उसका मूल्य सबसे अधिक होता

है। हज़रत आदम अ0 की श्रेष्टता का रहस्य इसी में छुपा है जिसका विस्तृत वर्णन कुर्आन में दर्ज है। इसी प्रकार आप देखते चले जाइये कि हर चीज़ को उसी वज़न के साथ जुड़ा पाएंगे। और वह अल्लाह के नाम से पैदा होता है जो अपने अन्दर शक्ति, बल, उच्चता और श्रेष्टता का खज़ाना रहता है, जिसको हज़रत मुजद्दिद रह0 ने बड़ी खूबी और अलबेले अन्दाज से बयान किया है "वज़न पैदा करने के लिए 'सुब्हानल्लाह' का लफ़्ज़ है, हम लोग नमाज़ के बाद "सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह" पढ़ते हैं लेकिन ये कोई मामूली चीज़ नहीं है। 'सुब्हानल्लाह' है कि अब उससे कोई वज़न पैदा नहीं होता। यदि हम उसे अमल के साथ, रूह के साथ और ज़बान के साथ पढ़ेंगे तो वज़न पैदा होता है। इसीलिए हज़रत मुजद्दिद रह0 ने तो यहाँ पर लिखा है कि जो "सुब्हानल्लाह" कहता है, समझ कर कहता है कि "आप दोष रहित हैं"। जब वह खुदा की ओर आकृष्ट होकर कहता है तो तुरन्त वज़न पैदा होता है और ऊपर से आदेश होता है कि उसका दोष मिटा दो। क्योंकि दोष से व्यक्ति भारविहीन होता है। इसीलिए देखिए जो चीज़ लाभदायक होती है, वह भारी होती है और नीचे बैठ जाती है। उसको पानी की धार बहा नहीं सकती। हवा उड़ा नहीं सकती। वह ज़मीन के अन्दर बैठ जाती है, क्योंकि वह नफा पहुँचाने वाली चीज़ है इसलिए कहा गया कि सबसे उच्चस्तरीय वह व्यक्ति है जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाला हो। देखिये! अब यहाँ कलम लगा हुआ है, आपने देखा कि दिल के पास लगा हुआ कलम लिखता है। उसके अन्दर रौशनाई होती है। अच्छा चलने वाला होता है तो दिल के पास लगा हुआ होता है। जब उसकी रौशनाई ख़त्म, उसकी निब बेकार, और वह पुराना हो गया तो ये जेब में दिखाई नहीं देगा, कूड़ेदान में पड़ा दिखाई देगा। और आप स्वयं निकाल कर फेंक देंगे। इसी प्रकार जो भारी लोग हैं उनको रखा जाता है, उनको फेंका नहीं जा सकता है।

आज कल बहुत सुनने में आता है कि यहां से उठा लिये गए वहां से उठा लिये। हल्केपन की बात है। इतना हमको वज़नदार होना चाहिए कि हमारी ओर आँखें न उठें। लेकिन जब हल्के हो गए और हमारे अन्दर वज़न ही न रहा और बेक़ीमत होकर रह गए तो आज हमारा हाल ये है कि जो चाहे हमारे साथ जो भी करे। जैसे कि कुछ लड़के क्लास में सीधे होते हैं बुद्धिनुसार, तो सारे लड़के उसको टिपयाते हैं, इधर मारा, उधर मारा, अरे भाई! अच्छी तरह पढ़ने-लिखने वाले बन जाओ। अपने दिमाग़ को होश के साथ रखो, फिर क्या मजाल कि कोई तुमको टिपयाए। ऐसे ही हम यदि अपने को वज़नदार बनाए रखेंगे, कीमत के साथ खुद को रखेंगे, और अपनी पूरी ताक़त के साथ रहेंगे तो हमारा काम हो जाएगा। और जो हमारा दायित्व है उसे पूरा नहीं करेंगे तो वज़न कैसे पैदा होगा? तो वज़न पैदा होता है पढ़ने से, अल्लाह के नाम से, और दूसरा आदेश ये है कि "निमंत्रण दीजिए अपने रब के रास्ते की ओर, युक्ति और अच्छी बातों के साथ और तर्क वितर्क अच्छे ढंग से करिये कि यही बेहतर है" तो यहाँ पर भी दो चीज़ें हैं। केवल ये नहीं कि निमंत्रण दो बल्कि अपने रब के रास्ते की ओर निमंत्रण दो, समूह की ओर मत बुलाओ, और दूसरे सांसारिक कार्यों की ओर मत बुलाओ। अल्लाह की तरफ बुलाओ, लेकिन उसके साथ युक्ति (हिकमत) और भली बातें भी हों। ऐसे ही तुक्के पर जो चाहे कर लिया, जो दिमाग़ में आया कर लिया, न सोचा न समझा। इस्लाम में अन्धे-बहरे होकर रहने का कोई औचित्य नहीं है। यहाँ अल्लाह ने इन्सान को जितनी योग्यताएं दी हैं, उन सबके इस्तेमाल का भी आदेश दिया है।

और जो उनका उपयोग नहीं करता वह अपनी योग्यता की उपेक्षा करता है। अल्लाह ने ऐसा सिस्टम बनाया है कि यदि आप इस आँख को जो आपको देख रही है, यदि दो महीने या छः महीने बन्द रखें तो नज़र कमज़ोर हो जाएगी। यदि आप हाथ चलाना छोड़ दें, ऐसे ही लटकाए रहें तो हाथ खराब हो जाएगा। तो ऐसी ही योग्यता भी है। जो उनका उपयोग नहीं करता तो उसकी वह योग्यताएं समाप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार यदि हम अल्लाह की दी हुई योग्यताओं का सही इस्तेमाल नहीं करेंगे तो न प्रभाव पड़ेगा, न ताक़त न वज़न पैदा होगा, और न कीमत रह जाएगी। बल्कि किसी काम के आप न रह जाएंगे तो कहा गया कि "और तैयारी करो उनके मुक़ाबले के लिये अपनी शक्ति के अनुसार" तो व्यक्ति को अपने अन्दर क्षमता रखनी चाहिये। ताक़त क्या है? आज कल ताक़त किसे कहते हैं? मीडिया की क्या ताक़त है ? शत्रु को वश में करने की लिए आधुनिक शक्ति क्या है? तो मेरे भाइयों! ये कोई खेल नहीं है और इसी के साथ आदेश है कि "जिहाद करो अल्लाह के रास्ते में अपनी जानों और मालों के साथ"। यहाँ भी देखिये कि अपनी जान व माल की क़ुर्बानी और शक्ति और योग्यता को अल्लाह के रास्ते में लगाने की बात की जा रही है।

ये सभी आयतें कि इनको बहुत ध्यान से देखना चाहिये। ये सारी आयतें वज़न पैदा करने वाली हैं, यदि आप ग़ौर करें तो हज़रत वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 ने बड़ी विचित्र बात लिखी है कि संसार बहुत तुच्छ है, उसका कोई मूल्य नही है, मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। हदीस में आता है कि दुनिया मच्छर के पर के बराबर भी होती तो अवज्ञाकारी (नाफरमान) को एक घूँट पानी न मिलता। लेकिन ये संसार परलोक से आँखें मिलाता है। ये दुनिया अपनी तुच्छता और हीनता के बावजूद उठ–उठ कर बड़ी–बड़ी शक्तियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाती है। शाह साहब रह0 ने लिखा है कि चार चीज़ें हैं। 1. अल्लाह का घर 2. अल्लाह के रसूल 3. अल्लाह की किताब 4. अल्लाह की नमाज़। ये चार चीज़ें हैं जिसने संसार को ऊँचे स्थान पर बैठा दिया है। यदि ये चार चीज़ें संसार में न हों तो संसार ही शेष न रहता। काबा ने दुनिया को इस तरह थाम लिया है कि जिस तरह बड़े–बड़े जहाज़ के लंगर डाल दिये जाते हैं तो वह हिलते नहीं। काबा ने संसार को थाम रखा है, और उसके साथ नमाज़ ने उसको सातवें आसमान पर पहुँचा दिया है। इसलिए नमाज़ मोमिन (मुसलमान) के लिए सोपान (मेराज) है और कुर्आन ने असाधारण शक्ति प्रदान की है। कुर्आन से यदि व्यक्ति सम्बन्ध बनाए तो उसके अन्दर एनर्जी पैदा हो जाती है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अनुसरण के लाभ–

इस अनुसरण के कारण आप (सल्ल0) से रहनुमाई हासिल होती है। यहाँ भी कामयाबी वहाँ भी कामयाबी। उनके अनुसरण के कुर्आन में दो लाभ बताए गए हैं, यदि तुम उनकी चाल चलोगे तो अल्लाह के प्रिय हो जाओगे। अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन से अनुकम्पा (रहमत) की बारिश होगी। आप (सल्ल0) की सुन्नतों पर अमल करने पर अल्लाह का सामीप्य प्राप्त होगा और अंत में बहुत संक्षिप्त में कहूँगा कि मैं अभी एक जगह गया तो एक विद्यार्थी ने कुर्आन सुनाया, उसके कुर्आन सुनाने से आँखें खुल गई, कुर्आन ने पूरा नक्शा खींच कर रख दिया है कि फिरऔन का दौर है, उसको अपनी सत्ता का अहंकार है, बच्चों के उठाए जाने का मुआमला चल रहा है, बनी इस्राईल के बच्चों को उठाया

जा रहा है और मार डाला जा रहा है, महिलाओं को अपमानित किया जा रहा है तो अल्लाह ने कहा है कि "और हमने एहसान किया मूसा और हारून पर, और बचा लिया हमने उनको और उनकी क़ौम को उस बड़ी घबराहट से, और हमने उन पर उपकार किया, और उनको बचा लिया" तो यहां पर साफ–साफ अल्लाह ने बता दिया कि अल्लाह ही के उपकार से बचोगे, अपने प्रयासों से नहीं बच सकते, लेकिन उपकार का एक नियम है कि अनुवाद "एहसान का बदला एहसान ही है" अल्लाह की सुन्नत क्या है अनुवाद "तुम अल्लाह की मदद करो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा" अल्लाह की सहायता धर्म (दीन) की सहायता पर है। अल्लाह की मदद तभी आएगी जब हम दीन की मदद करेंगे।

उपकार का बदला उपकार–

अल्लाह का उपकार उस समय होगा जब हम उसकी सृष्टि पर उपकार करेंगे। और उपकार के न जाने कितने रूप हैं। जैसे हदीस में है कि आप (सल्ल0) ने कहा कि रास्ते पर बैठते हो तो रास्ते का हक़ अदा करना पड़ेगा। पहले तो आपने रास्ते पर बैठने से मना किया तो सहाबा ने कहा कि हज़रत ये तो हमारी चौपाल है, बैठना ज़रूरी है। इस पर आप (सल्ल0) ने कहा कि तब तो उसका हक़ अदा करो, सलाम का जवाब दो और कोई रास्ता भटक रहा हो तो रास्ता दिखाओ। ये सब बातें बताईं। यही मुआमला यहाँ है। उपकार करना पड़ेगा यदि कोई गैर मुस्लिम है, बहुदेववाद (शिर्क) में लिप्त है, नकार (कुफ्र) में डूबा है, उसे निकालने के जो भी प्रयास करने पड़े, करना होगा। ये सबसे बड़ा उपकार है, उससे बड़ा कोई उपकार नहीं। इसीलिए जो इस पर मिलेगा वह किसी पर नही।

बहके हुए, भटके हुए, वैचारिक तौर पर पथभ्रष्ट (गुमराह) हुए लोगों को आप सही रास्ते पर लगाएं, ये भी उन पर उपकार है और शेष आजकल उपकार के इतने रूप हैं कि कोई बीमार है, कोई दुखियारा है, कोई अनाथ, निर्धन, विधवा है तो सब पर उपकार करते चले जाइये, ऊपर से उपकार की बारिश होने लगेगी और समस्त समस्याओं का निदान होता चला जाएगा। लेकिन जब हम भारविहीन हो गए और बेवज़न करने वाले काम करने लगे तो अल्लाह ने भी छोड़ दिया कि तुम निबटो, तुम जानो। ये हो रहा है, वह हो रहा है, होना कुछ भी नहीं। आप ये बात लिख लीजिए, चाहे जितना ज़ोर लगा लें, जितने प्रयत्न कर डालें, जब तक सही रास्ते पर नहीं चलेंगे और अल्लाह व उसके रसूल के बताए हुए नियमों पर नहीं चलेंगे, उस समय तक कुछ होने वाला नहीं है। और वही हमने छोड़ दिया।

हर चीज़ उल्टी हो गई–

बात ये है कि हर चीज़ उल्टी हो गई है। उसकी मिसाल ये है कि कुर्आन में कहा गया कि "जीविका हमारे जिम्मे है" लेकिन हम ज़बान हाल से कहते हैं कि अल्लाह ये काम हमारा है, जीविका हम कमाएंगे और अल्लाह ने कहा कि "तुम बेहतरीन उम्मत हो, लोगों को बुराई से रोकते हो और भलाई का आदेश देते हो अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो" लेकिन हमने कहा कि अल्लाह मियां! ये आपका काम है। ये बनी इस्राईल की क़ौम कैसे पैदा हो गई? हज़रत मूसा अ0 ने उनसे जब जिहाद के लिए कहा तो उन्होंने कहा जाइये, आप और आपके रब दोनों लड़लें, हम यहां बैठे हैं देखते हैं कि क्या होता है, जब मैदान साफ हो जाएगा, तब आएंगे। आज हमारा भी हाल यही है, हम खुल कर नहीं कहते ज़बान हाल से कहते हैं, यहूद ज़बान से कहते हैं, इतने कम बख्त हैं, इसीलिए कुर्आन में है "समिअ्ना व असय्ना" अर्थात हमने सुना और अवहेलना

शेष पृष्ठ .....20 पर

मुस्लिम समाज

समाज सुधार क्यों और कैसे ?

हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अनु0: मुहम्मद अदील अख्तार

मुसलमानों को अपने दीन (धर्म) पर अमल करना और अपने घरेलू मुआमलात को शरीअते इस्लामी के अहकाम के मुताबिक अंजाम देना कितना जरूरी है, इसको कुर्आने करीम और हदीस शरीफ की तालीमात से बखूबी समझा जा सकता है। मुसलमानों की शरीअत उनकी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं में रहनुमाई करती है। उनके जिन्दगी के मुश्किलात का हल करना बताती है, उन जरूरतों का हल बताने वाली शरीअत से रूगरदानी करना ना सिर्फ ये कि बड़ी महरूमी की बल्कि खुदा को सख़्त नाराज़ करने वाली बात है। इससे मुसलमानों को अपने परवरदिगार की मदद व रहमत से महरूमी मिलती है। बल्कि अल्लाह तआला की तरफ से सख़्त पकड़ होने का अंदेशा हो जाता है। अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुर्आन मजीद में साफ–साफ फरमा दिया है कि उसको अपनी तरफ से अता कर्दा दीन व शरीअत की खिलाफ वर्जी बिल्कुल कुबूल नहीं, फरमाया "और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा वह उससे हरगिज कुबूल नही किया जायेगा और ऐसा सख़्स आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में होगा"। (सूरः आलेइमरान–85)

क्या ये ज़माना जाहिलयत के हुक्म के ख़्वाहिश मन्द है? और जो यकीन रखते हैं उनके लिये खुदा से अच्छा हुक्म किसका है?। (सूरः माइदा–50)

अल्लाह तआला ने अपना यह दीन और शरीअत अपने आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के ज़रिये मुसलमानों को अता किया और अपने उस आखिरी नबी के आदेशों (अहकामात) और फैसलों को मानना ज़रूरी करार दिया और यह फरमाया कि उस के माने वगैर कोई मुसलमान मुसलमान नही रहता, फरमाया "तुम्हारे परवरदिगार की कसम! यह लोग जब तक अपने तनाजूआत (विवादों) में तुम्हें मुन्सिफ न (न्यायाधीश) बनाए और जो फैसला तुम कर दो उससे अपने दिल में तंग न हों बल्कि उसको खुशी से मान लें तब तक मोमिन नहीं होंगे"। (सूरः निसा–65)

लेकिन सख़्त अफसोस की बात है कि मुसलमानों में अपनी शरीअत के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारने से बड़ी बे तवज्जुही पैदा हो गई है। उसके अहकामात (आदेशों) की तालीम के बजाये दूसरों के रस्मों रिवाज पर अमल किया जाने लगा है, जो कि एक तरफ खुदा और उसके रसूल की ना फरमानी और उनकी नाराजगी का कारण है। दूसरी तरफ मुसलमानों का बहैसियत मुसलमान साबित होना मुश्किल हो गया है। वह अपने दीने फितरत (प्राकृतिक धर्म) इस्लाम के तौर तरीके इख़्तियार करने के बजाये जाहिलाना व मुशरिकाना और बेजा तौर व तरीके को इख़्तियार करने वाले और गैरों की रस्मों को अपनाने वाले बनते जा रहे हैं।

ऐसी सूरते हाल कुछ तो गफलत और नफ्स परस्ती के सबब हुई है और कुछ अपनी शरीअत से ना वाकफियत की बिना पर हुई है।

इसी लिए इस मुल्क में जहाँ का दस्तूर सेकूलरिज्म पर आधारित है और जहाँ मुसलमान अल्पसंख्यक हैं, हुकूमत से बहुत उम्मीद नही की जा सकती, इस को मिल्लते इस्लामी के फरजन्द ही अंजाम दे सकते हैं, क्यों कि अपनी मिल्लत

शेष पृष्ठ .....20 पर

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का दावती मिज़ाज

—बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज़रात अम्बिया कराम अलै0 का सबसे बड़ा मिशन अल्लाह की दावत है। इसी में उनकी ज़िन्दगियां गुज़री हैं, उनके आने का मक़सद ही यही होता है कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ा जाए और उनको सही रास्ता बताया जाए। हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपनी औलाद के लिये जिस नबी की दुआ की, उसके बारे में यही फरमाया किः (अनुवाद– ऐ हमारे परवरदिगार! उन्हीं में से एक रसूल भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए, और उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा दे, और उनके दिलों को साफ करे) अतः अल्लाह तआला ने दुआ कुबूल फ़रमाई और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को भेजा।

हर नबी की ये विशेषता कुर्आन मजीद में बयान की गयी है कि उसने अपनी दावत को बिल्कुल शुद्ध रखा है और क़ौम के सामने उसको स्पष्ट भी किया है। लगभग हर नबी के बारे में उनकी ज़बानी कुर्आन मजीद में ये शब्द मौजूद हैंः (अनुवाद– मैं तुमसे कोई उजरत नहीं मांगता मेरी उजरत तो अल्लाह रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है)।

मुहम्मद सल्ल0 की ज़ात कमालों का संग्रह है। चुंकि आप सल्ल0 क़यामत तक के लिए आये हैं और पूरी दुनिया के लिये हैं इसलिये आपकी दावत में कमालों की विशेषता पूरी तरह से मौजूद हैं। और आप सल्ल0 के दावत के तरीक़े को अपनाने वालों की ज़िम्मेदारी है कि वो उन विशेषताओं को भी मुमकिन हद तक अपनाने की कोशिश करें।

इख़लास और सब्र

ये दीन की दावत की बुनियाद है, दावत के काम में इससे रूह और ज़िन्दगी पैदा होती है। आप (सल्ल0) को ख़िताब करके कुर्आन मजीद में कहा गयाः (अनुवाद– फ़रमा दीजिए कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिये है जो जहानों का पालनहार है)।

इख़लास और सब्र का उद्मग आप (सल्ल0) की ज़ात है। आप आप (सल्ल0) की दावत का मक़सद ही अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ना था। भेजे जाने की शुरुआत में जब आप (सल्ल0) ने दावत का काम शुरु किया तो इस काम से आप (सल्ल0) को हटाने की हर मुमकिन कोशिश की गयी, लेकिन आप (सल्ल0) इस काम में लगे रहे, हर प्रकार की पेशकश भी आप (सल्ल0) को की गयी, तरह–तरह से सताया गया यहां तक अबू तालिब जो आपके हमदर्द और मुहब्बत रखने वाले चचा थे, उनके पास लोग गये और उनको आमादा किया कि वो आप (सल्ल0) को इस दावत के काम से रोकें। उन्होंने हुजूर सल्ल0 को बुलाया और कहा कि ऐ मेरे प्यारे! इतना बोझ न डालो कि मैं उठा न सकूं। हुजूर सल्ल0 की आँखों में आँसू आ गये, और आप सल्ल0 ने फ़रमाया "ऐ चचा जान! अगर आप मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे में चाँद रख दें तो भी मैं इस काम को नहीं छोड़ सकता यहां तक कि अल्लाह तआला ही फ़ैसला फ़रमा दे"।

ये काम अल्लाह का दिया हुआ था, आप सल्ल0 हर तरह से तकलीफें उठाते रहे, लेकिन एक क्षण के लिये भी आप (सल्ल0) ने उसमें कमी नहीं की। फिर जब जांनिसारों की एक जमाअत तैयार हो गयी, उस समय भी आप (सल्ल0) ने एक लम्हे के लिये भी आराम नहीं किया।

सूरज ग्रहण के बारे में लोगों का विचार ये था कि ये किसी बड़े हादसे के समय होता है, जब आप (सल्ल0) के साहबज़ादे की वफ़ात हुई तो सूरज ग्रहण हुआ। लोगों

ने इसकी वजह यही बताई, आप (सल्ल0) ने सहाबा को मस्जिद में जमा किया और ऐलान फरमाया कि ये सूरज और चांद अल्लाह की निशानियां हैं, किसी की मौत और ज़िन्दगी से इसमें ग्रहण नहीं होता।

दर्द व फ़िक्र

उम्मत के एक–एक व्यक्ति के लिये दर्द व फ़िक्र आंहज़रत सल्ल0 की दावत की एक आधारभूत विशेषता थी, आप सल्ल0 की तड़प का ज़िक्र खुद अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में किया है: (अनुवाद–लगता है कि अगर लोग ईमान न लाये तो आप अपने को हलाकत में डाल लेंगे)।

मक्का मुकर्रमा में लगातार आप सल्ल0 दावत देते रहे। फिर इस उम्मीद से ताएफ़ तशरीफ़ ले गये कि शायद वहां लोगों में ईमान पैदा हो लेकिन उसके विपरीत वहां के लोगों ने आंहज़रत सल्ल0 के साथ बदतरीन सुलूक किया। आप सल्ल0 लहूलुहान हो गये, खून बह रहा था कि इसी हाल में फ़रिश्ता आया और उसने कहा कि अगर आप हुक्म दें तो ताएफ़ के दोनो तरफ़ जो पहाड़ हैं उनको मिला दिया जाए और पूरी बस्ती पिस कर रह जाए। आप सल्ल0 ने इसे पसन्द न फ़रमाया और इरशाद हुआ कि अगर ये ईमान नहीं लाते तो हमें उम्मीद है कि उनकी आने वाली नस्लें ईमान लाएंगी।

उम्मत के लिए आप सल्ल0 के दर्द व फ़िक्र की क्या स्थिति थी, आंहजरत ने इसकी एक मिसाल दी है कि एक व्यक्ति आग सुलगाता है, जब आग खूब रौशन हो गयी तो परवाने आकर उसपर गिरने लगे। आप सल्ल0 ने फ़रमाया मेरी तुम्हारी मिसाल ऐसी ही है कि तुम आग में गिरे पड़ रहे हो और मैं तुम्हें कमर से पकड़–पकड़ कर रोकता हूं, मगर तुम मेरे हाथों से फिसले जाते हो।

हर वर्ग के लिये

जब आप सल्ल0 को नुबूवत मिली और पहली "वही" आयी तो आप सल्ल0 पर अजीब कैफ़ियत तारी हुई, आप घर तशरीफ़ लाये और हज़रत ख़दीजा रज़ि0 से फ़रमाया: जम्मिलूनी, जम्मिलूनी (मुझे उढ़ा दो, मुझे उढ़ा दो) फिर तब्लीग का हुक्म आ गया, हुक्म हुआ की पहले रिश्तेदारों को डराया जाए, आप सल्ल0 ने खाने की व्यवस्था की और सभी अज़ीज़ों व रिश्तेदारों को बुलाया, खाने के बाद आप सल्ल0 ने तौहीद की दावत पेश की, बात सभी ने सुन ली, कुछ न कहा, बदबख़्त अबूलहब बुरा भला कहता हुआ उठ गया। अब समय आ गया कि साधारण लोगों को दावत दी जाए, आप सल्ल0 कोई अवसर ख़ाली नही जाने देते, उनके बाज़ारों में जाते, और कहते: "ऐ लोगो ला इलाह इल्लल्लाह को मान लो कामयाब हो जाओगे" हज के अवसर पर जो विभिन्न क्षेत्रों के लोग आते, उनको आप सल्ल0 दावत देते, मदीना मुनव्वरा में इस्लाम का बीज वहीं से पड़ा, पहले चक्र में कुछ लोग और फिर बाद में बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हुए, मदीना मुनव्वरा में हिजरत के बाद भी दावत का सिलसिला जारी रहा, यद्यपि युद्धों के लगातार होने से आप को दूसरे देशों में दावत पहुँचाने का मौक़ा नहीं मिल सका। जब सुलह हुदैबिया हुई तो इस सुलह की मुद्दत यद्यपि दो ही साल स्थिर रह सकी, लेकिन आप सल्ल0 ने हर वर्ग को दीन की दावत दी, लोग आते थे और आप सल्ल0 के अख़लाक़ व किरदार और सच्चाई अमानतदारी से प्रभावित होते, उस समय के शुद्ध इस्लामी समाज से प्रभावित होते, और इस तरह इन दो सालों में बहुत तेज़ी के साथ इस्लाम फैला। इन्हीं दिनों में आप सल्ल0 ने दुनिया के बड़े–बड़े शासकों को दावत के ख़त भी भेजे और उसके लिये मोहर बनवायी।

बेहतर ज़बान और तरीक़े का प्रयोग

अरबों को अपनी ज़बान पर नाज़ था और वही बात उन पर असर डालती थी जिसमें ज़बान उच्च स्तर की हो। अल्लाह ने इसलिये आप सल्ल0 को कुर्आन करीम का मोजज़ा अता फ़रमाया,

और उसमें फ़रमा दिया: (अनुवाद– ये बहुत साफ़ अरबी ज़बान में है) इसकी ऐजाज़ बयानी को हर एक ने स्वीकार किया, दुश्मनों को खुली दावत दी गयी कि इस जैसी एक छोटी सी सूरह ही बना लाओ लेकिन वो नहीं बना सके। सुनते थे और सर धुनते थे, सब कुछ कहते थे, लेकिन कुर्आन मजीद की ऐजाज़ बयानी के आगे उनके सर झुके हुए थे, हुजूर सल्ल0 को भी अल्लाह तआला ने ऐजाज़ बयानी से नवाज़ा था, इसलिये अरबी अदब के आला तरीन नमूनों में कुर्आन मजीद के बाद हदीस–ए–नबवी सल्ल0 का दर्जा है, खुद आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि: (बयान की कुव्वत में एक जादू होता है) ज़बान के प्रभाव का महत्व सबको स्वीकार था, आप सल्ल0 ने बहुत आला ज़बान इस्तेमाल फ़रमायी, और इसको भी दावत का एक प्रभावित ढंग बताया।

हज़रत हस्सान रज़ि0 को शायर–ए–रसूलल्लाह सल्ल0 कहा जाता है। आप सल्ल0 कभी–कभी मुशरीकीन मक्का का जवाब देने के लिये मस्जिद नबवी में मेम्बर पर अश्आर पढ़वाते, इरशाद होता कि ये उन दुश्मनों के लिये तीरों से ज़्यादा असरदार हैं।

❖❖❖

मुस्लिम समाज .....

को इसतेवार और महफूज़ रखने की ज़िम्मेदारी खुद उन्हीं की है। शरीअते इस्लामी के सिलसिले के मुआमलात को मुल्क के अदालती व दस्तूर साजी के इदारों से जो तअल्लुक है उसके लिये अल्हमदु लिल्लाह हुकूमत के सामने गलत फहमियां दूर करने की जद्दोजहद मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के ज़िम्मेदारों ने अंजाम दी है, और शरीअते इस्लामी को नुक्सान पहुँचाने वाले कई कानूनों को बदलवाया है, और उसके दायरे में जब कोई नई पेचीदगी होती है तो बोर्ड उसकी फिक्र करता है और उसके लिये जद्दोजहद करता है। इसी तरह इस महाज पर अलहम्दुलिल्लाह जरूरत के मुताबिक काम अंजाम पा रहा है।

❖❖❖

स्वयं को पहचाहिए.....

की। लेकिन हमारा हाल ये है कि हम ज़बान से "अल्हम्दुलिल्लाह" नहीं कहते।

अब हमारी हर चीज़ उल्टी हो गई है, उसकी मिसाल ये है कि ये पंखा जो चल रहा है, उससे सम्बन्धित एक घटना सुनाता चलूँ कि मेरी छोटी सी एक दुकान है, उस पर बैठा हुआ था, पच्चीस साल पुरानी बात है, और वह तेज़ी से चल रहा था लेकिन हवा तनिक भी नहीं दे रहा था। सामने मैकेनिक की दुकान थी, उनको बुलाया कि देखियें! पंखा चल तो बड़ी तेज़ी से रहा है लेकिन हवा बिल्कुल नही लग रही है। तो मैकेनिक ने ऊपर कुर्सी रखी, देखा और देखते ही कहने लगा मौलाना! "पर" उल्टे लग गए हैं। चल तो बड़ी ज़ोर से रहा है, लेकिन हवा कुछ नही लग रही है। तो आजकल मैं यदि खुलकर कहूँ तो बुरा न लग जाए कि बात ये है कि हमारे मदरसों की इतनी बड़ी संख्या, इतने काम करने वालों की तादाद और इतनी हमारी भीड़, इतना चलना–फिरना और इतना दिखना –दिखाना, सब कुछ है, लेकिन हवा नहीं लग रही है। तो जब वज़न पैदा होगा तो हवा लगेगी। जब हम कीमती होंगे तो हवा आएगी। फिर ज़्यादा कहने और मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। आपके सामने स्वयं परिणाम अच्छे आएंगे। अल्लाह हम सबको वज़नदार बना दे और हम सबको उसकी रहनुमाई भी फरमा दे।

❖❖❖

हिदायत की किताब.....

मालिक के साथ किसी दूसरे को शरीक न करे, ये एकेश्वरवाद जितना शक्तिशाली होता जाता है और अल्लाह की ज़ात पर यकीन जितना बढ़ता जाता है, हिदायत के दरवाज़े उतने ही खुलते जाते हैं।

❑❑

आदर्श शासक

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अंधियारी रात थी। हज़रत तलहा रज़ि0 जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के प्रमुख सहचरों (सहाबा) में से थे, डगर पर पग बढ़ाए जा रहे थे कि इतने में एक व्यक्ति दिखाई दिया। वह उसकी तरफ लपके और काली सी रात में भी उसको पहचान लिया कि वह महान शासक हज़रत उमर रज़ि0 थे। लेकिन उनसे कुछ कहने और मिलने की हिम्मत न जुटा सके।

इधर हज़रत उमर रज़ि0 जल्दी से एक जर्जर झोंपड़ी में घुस गए। हज़रत तलहा रज़ि0 उनका बाहर बैठ कर इन्तेज़ार करते रहे। कुछ देर बाद हज़रत उमर रज़ि0 फिर दूसरी झोंपड़ी में घुस गए। हज़रत तलहा रज़ि0 समझ गए कि वह महान सम्राट क्या कर रहा है।

सवेरा हुआ तो हज़रत तलहा रज़ि0 उस झोंपडी में पहुँचे जहां रात में हज़रत उमर रज़ि0 गए थे। आवाज़ देकर अन्दर गए तो देखा कि उसमें एक बुढ़िया रहती है। उसकी आँखों से कुछ सुझाई नहीं देता। कुछ देर उसके पास बैठ कर बोले, माई! तेरा काम–काज मैं कर दिया करुँ ? बुढ़िया ने कहा "नहीं बेटा! मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। अल्लाह प्रतिदिन अपने एक फरिश्ते को मेरी सेवा हेतु भेजता है। वह बेचारा मेरा सारा काम–काज कर देता है"।

हज़रत तलहा रज़ि0 ने बूढ़ी माई से पूछा, आप जानती हैं वह कौन है? बूढ़ी अम्मा ने कहा, नहीं बेटा! मैंने कभी उससे नहीं पूछा कि तू कौन है। हज़रत तलहा रज़ि0 को ये विवरण मिला तो अपने महान सम्राट को दुआएं देते हुए वहां से लौट आए।

ये सारी बातें हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से उनके सहचरों (सहाबा) ने सीखीं थीं।

एक और महान सहचर की महानता का वर्णन करता चलूं कि एक यात्री अपने गांव से चला और शहर में आया। उसने सुस्ताने के लिए एक मस्जिद ढूँढी। वहां पहुंचा तो देखा कि एक व्यक्ति जौ की रोटी पानी में भिगो कर खा रहा है।

यात्री उसे बड़े ध्यान से निहारता रहा कि वह बड़ा अजीब आदमी है। जौ की रोटी बड़े चाव से खा रहा है। भला जौ की सूखी रोटी मजे लेकर खाने वाली चीज़ है?।

खैर! यात्री जो गांव से आया था, बड़ा परेशान हाल था। किसी ने उससे राह सुझाई कि शहर जाओ और खलीफा (शासक) से अपनी व्यथा सुनाओ। अल्लाह ने चाहा तो तेरा काम बन जाएगा।

वह यात्री अपनी परेशानियों के दूर होने के मीठे–मीठे सपने देखता। लेकिन शहर पहुँचा तो ये सीन देखकर उसका मन बैठ गया कि जब खलीफा के शहर के लोगों की ये हालत है तो फिर मेरा भला होने से रहा।

उस यात्री को मायूस देखकर जौ की रोटी खाने वाले व्यक्ति ने उससे पूछा कि भाई! तुम इतने उदास क्यों हो गए ? जब तुम यहाँ आये थे तो बड़े खुश दिखाई दे रहे थे! यात्री ने कहा भैइया! मुसीबत का मारा हूँ, इस आशा से शहर में आया था कि खलीफा की कुछ मदद लूँगा, लेकिन जब मैंने देखा कि खलीफा के शहर वालों को स्वयं ढंग की रोटी नहीं मिलती तो दिल बैठ गया।

ये सुनकर व्यक्ति ने उसकी व्यथा सुनी और उसे दिलासा दिलाया। अपने साथ ले जाकर

शेष पृष्ठ.....25 पर

(देवनागरी लिपि में उर्दू)

जुनूबी कोरिया में दावते इस्लाम के इम्कानात रौशन

—डॉ0 अब्दुल वहाब नदवी (मुफ़्ती कोरिया)

सवालः जुनूबी कोरिया में इस्लाम कब पहुँचा और इसके पीछें कौन लोग थे?

जवाबः सहीह बात यह है कि जुनूबी कोरिया में बाकाइदा तौर पर सबसे पहले इस्लाम तुर्क फौजी दस्ते के जरिये पहुँचा जो अक्वामें मुत्तहिदा की फौजों के साथ वहां गया हुआ था, यह फौजी दस्ता वहां 17 अक्तूबर सन् 1950 ई0 में पहुंचा। चूंकि तुर्की एक इस्लामी मुल्क है इसलिये फौजी दस्ते के साथ इमाम और दीनी रहनुमा भी भेजे गये थे। तुर्क फौजें जिस जगह कियाम करतीं, वहीं फौजी कैम्प के करीब एक खेमा नमाज़ के लिये भी नसब कर दिया जाता। कपड़ों का बना यह खेमा ही मस्जिद होता था। और यही दावती मरकज़ भी होता, जहाँ से नूरे ईमान की शुआएं फैलती थीं, अल्लाह जल्ल शानुहू का करना ऐसा हुआ कि कुछ ही दिन बाद इस खेमा वाली मस्जिद के दावती मरकज़ की ज़ियारत के लिये कुछ कोरियाई वहाँ पहुँचे। उनका वहाँ आने का मक़सद इस्लाम का तआरुफ हासिल करना था। उस मस्जिद के इमाम शैख़ जुबैर कोश रह0 ने बड़ी गर्मजोशी से उन कोरियाई जायरीन का इस्तिक़बाल किया और बड़ी वज़ाहत से इस्लाम के बारे में उन्हें बताया। इनमें से तीन लोगों ने तो फौरन इस्लाम क़बूल कर लिया जिनके नाम उमर, मुहम्मद, और सबरी रखे गये थे। इनमें से मुहम्मद पहले कोरियाई इमाम की हैसियत से मारुफ हुए। मैंने 1982 ई0 में उनसे मुलाक़ात की थी, मैं उस वक्त दावत व इरशाद के दफ्तर का इन्चार्ज था। मलेशिया के उस वक्त के वजीरे आज़म टंकू अब्दुर्रहमान ने जुनूबी कोरिया के दौरे के मौक़े पर उनके साथ नमाज़ अदा की और जुनूबी कोरिया के दारुल सल्तनत सियोल में एक मस्जिद तामीर करने के लिये और "जमीअते इस्लामी" की तासीस के लिये एक बड़ी रक़म बतौर चन्दा दी थी। यह तक़रीबन 1965 की बात है। 1965 ई0 में ही अक्वामें मुत्तहिदा के प्रोग्राम के तहत पाकिस्तान से सरकारी तिब्बी वफ़ूद आये, इन वफ़ूद ने जुनूबी कोरिया के लोगों में ईमान के अनासिर मजबूत करने और उन्हें तक्वीयत देने में बड़ा अहम रोल अदा किया।

उन्होंने मुख़्तलिफ जिहतों से रूपये जमा करके उनके लिये एक मस्जिद बनाई और एक इस्लामी जमीअत की बुनियाद रखी, लेकिन यह जमीअत कामयाब न हो सकी। इधर कोरियाई मुसलमानों ने अपनी जिद्दो—जुहद जारी रखी यहाँ तक की अल्लाह तआला ने उन्हें एक मौक़ा फराहम किया कि उन्होंने इस्लामी मुमालिक से माली तआउन हासिल करने के लिये एक वफ़्द तैयार कर लिया, वफ़्द ने खलीजी मुमालिक का दौरा किया और उन्हें इतना ज़ियादा माली तआउन मिला कि मुसलमानों ने सियोल में एक बड़ी मस्जिद तामीर कर डाली। वाज़ेह रहे कि मस्जिद के लिय जमीन कोरिया की हुकूमत ने मुहय्या की थी। इस मस्जिद का इफतिताह 1976 ई0 में हुआ, इस तरह अलहम्दुल्लिाह मशरिके बईद में इस्लाम फैला और उसकी बुन्यादें मजबूत हुईं, फिर तो कोरिया के बड़े शहरों में मस्जिदों की तामीर का एक सिलसिला शुरु हो गया। लीबिया के डॉ0 फलाह ने बोसान शहर में एक मस्जिद अपने खर्च पर तामीर की, इस मस्जिद की तामीर का काम 1980 में मुकम्मल हुआ, यह मस्जिद अभी तक अपना रोल अदा कर रही है। इसी तरह

1982 ई0 में दारुल सल्तनत सियोल से करीब कोवांजो के इलाक़े में एक मस्जिद की तामीर का खर्च कुवैत के मुहम्मद नासिर हमजान ने अपने जिम्मे ले लिया, मौसूफ उस वक्त कुवैत में अवकाफ व इस्लामी उमूर की वजारत में अण्डर सिक्रेट्री थे, 1985 में मिस्र के एक सरमायादार अब्दुल लतीफ शरीफ ने मुझे एक बड़ी रकम मस्जिद की तामीर के लिये दी, मैंने कोरियाई मुसलमानों के ज़रीये उस रकम से मस्जिद तामीर करवाई। हमने उस मस्जिद का नाम मस्जिद अबू बक्र सिद्दीक़ और इस्लामी सेन्टर रखा है। अल्लाह के फज़्ल से इस मस्जिद व मरकज़ की दावती सरगर्मियां पूरे जुनूबी कोरिया में सब से जियादा हैं।

सवालः जैसा कि आपने बताया कि आप जुनूबी कोरिया में दावत का काम 1984 ई0 से अंजाम दे रहे हैं, और फिलहाल आप वहां मुसलमानों के मुफ्ती भी हैं, इस लिये बजा तौर पर आपसे यह सवाल किया जा सकता है कि कोरियाई कौम के क़बूल इस्लाम के रुझान के बारे में आपकी क्या राय है?

जवाबः दरअस्ल कोरियाई कौम मुख्तलिफ तरह के अक़ीदों की हामिल है। इनमें कोई बुद्धिष्ट है, कोई कन्फोशिस (आबा व अज्दाद की अरवाह की तक्दीस) का काइल है, कुछ लोगों का अकीदा है कि खैर व शर के अलग–अलग खुदा हैं, लेकिन इनकी गालिब अक्सरियत का ना कोई मजहब है न कोई अकीदा, ऐसे लोगों को जब अपनी शख्सियत में कोई कमी महसूस होती है तो वह किसी भी मजहब से अपना तअल्लुक जाहिर करने लगते हैं, यही वजह है कि एक कोरियाई शख्स के लिये किसी दीन की दावत क़बूल करना आसान है, बशर्ते कि उसके सामने यह बात वाज़ेह हो जाये कि उसके कबूल करने में उस का अपना मफाद है, अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम लेकचर्स के ज़रिये उनके सामने इस्लाम की हकीकत बयान करें और खालिक़े कायनात और उसकी सिफात की तशरीह इस तरह करें कि हमारी ज़िन्दगी में जो नेमतें हमें हासिल हैं वह सब उसी एक खुदा की अता की हुई हैं। इस्लाम के उस अक़ीदा–ए–साफी की वजाहत करें जिसके लिए अंबिया व रसूल भेजे गये थे। इस के अलावा इन के सामने दीने इस्लाम के महासिन बयान करने की भी ज़रूरत है। इस काम के लिये हम इजतिमाआत मुनअकिद कराते हैं और मुस्लिम व गैर मुस्लिम सब को इन में शिरकत की दावत देते हैं। इस का बड़ा फायदा यह होता है कि समाज के मुख्तलिफ तबक़ात के दरमियान अच्छे तअल्लुक उस्तवार होते हैं और शुरका में से हर एक को दूसरे से मानूस होने का मौक़ा मिलता है, हमारे लिये यह बात बड़ी खुश आइन्द है कि कोरियाई बाशिन्दों की एक बड़ी तादाद (जो मर्द व खवातीन पर मुशतमिल है) हर साल मुशर्रफ ब इस्लाम होती है, इन नौ मुस्लिमों का तअल्लुक समाज के हर तब्क़े से होता है, और वह सब इस्लामी अक़ीदे की खूबियों और उसके अमली अरकान (नमाज़, ज़कात, रोजा और हज) से मुतअस्सिर हो कर दिल की पूरी आमादगी से इस्लाम कबूल करते हैं।

सवालः कोरिया में कितने इस्लामी मराकिज़ और कितनी मसाजिद हैं?

जवाबः मुख्तलिफ शहरों में 6 बड़ी मस्जिदें हैं जिनके नाम सियोल (दारुल सल्तनत), बोसान, जहां कोरिया की सबसे बड़ी बन्दरगाह है "जन्जू" में मुल्क के वस्त में वाके है, इनके अलावा दारुल सल्तनत सियोल से करीब "कोवांजो" शहर में बड़ी मस्जिद है। इस तरह सियोल के करीब ही एक शहर "ईनानज" है वहाँ भी एक बड़ी मस्जिद है, इन शहरों में बहुत से छोटे–छोटे इस्लामी मराकिज़ और मुसल्ले (नमाज़ गाहें) हैं जिन्हें बांग्ला देश, पाकिस्तान, इन्डोनेशिया, हिन्दुस्तान, मलेशिया, के मजदूरों और ताजिरों ने काइम किया है, पूरे मुल्म में सत्तर से जियादा ऐसे मुसल्ले हैं जहां नमाज

पंजगाना के अलावा जुमे और ईदैन की नमाज़ें भी पाबन्दी से काइम की जाती हैं, और हर एक में दर्से कुर्आन का इन्तिजाम है। इन मस्जिदों की तरफ हमारा बराबर दौरा होता रहता है।

सवालः ज़बान के मसअले पर आपने कैसे काबू पाया?

जवाबः जब मैंने सरज़मीने कोरिया में दावत का आगाज किया तो बिल्कुल शुरु ही में अल्लाह तआला ने मेरे लिये ऐसे कोरियाई नौजवान मुहय्या कर दिये जो अरबी ज़बान अच्छी तरह बोल लेते थे, इन के नाम कमरुद्दीन और सुलैमान हैं। हम तीनों ने मिलकर एक दावती ग्रुप बनाया, सुलैमान मुलाकातों का प्रोग्राम तै करता था, मैं लोगों से गुफ्तगू और उन्हें दावत देने का काम करता था और कमरुद्दीन तर्जुमे की जिम्मेदारी संभाले हुए था। फिर मैंने कोरियाई ज़बान सीखनी शुरु की। मैं हर मौके पर कोरियाई ज़बान और अल्फाज सीखने और याद करने की कोशिश करता था, बिल आखिर अल्लाह तबारक व तआला की मदद शामिले हाल हुई और मैं ने कोरबी ज़बान सीख ली। मैंने इस्लामी अकीदे के मौजू पर कोरियाई ज़बान में मुतअद्दिद किताबें लिखीं हैं मजीद बरआं मैंने कोरिया के बाशिन्दों की नफ़्सियात को सामने रखकर नौ मुस्लिमों और गैर मुस्लिमों के लिए किताबें लिखी हैं जिनकी मजमुई तादाद बीस से ज़ियादा हैं।

सवालः क्या कोरियाई नस्ल के मुसलमानों में अरबी जबान सीखने का शौक पाया जाता है? और क्या, वहां कोरियाई ज़बान में इस्लामी कुतुब मौजूद हैं?।

जवाबः बहुत से कोरियाई लोग इस्लाम कबूल करने से पहले मुझसे अरबी ज़बान सीखने की ख्वाहिश करते हैं, और वह कोरियाई बाशिन्दे जो कोरियाई ज़बान के ज़रिये अरब मुल्कों में काम कर रहे हैं वह सब से जियादा अरबी ज़बान सीखने के मुतमन्नी रहते हैं, हम अपने तौर पर इस्लामी मराकिज़ में अरबी सिखाने का प्रोग्राम जारी किये हुए हैं, इस प्रोग्राम का मक्सद कोरियाई बाशिन्दों के दरमियान इस्लामी सकाफत को फरोग देना है। मैंने अरबी सिखाने के लिये एक किताब भी लिखी है, जिस के जरिये कोरिया के मुसलमानों और गैर मुस्लिमों की एक बड़ी तादाद ने अरबी ज़बान सीख ली है। कोरिया में इस्लाम से मुतअल्लिक मुख्तलिफ मौजूआत पर मुतअद्दिद किताबें अंग्रेजी जबान से तर्जुमा हुई हैं जो उनकी काफी हद तक जरूरत पूरी करती हैं।

सवालः क्या मसाजिद व मराकिजे इस्लामी के लिए मुस्लिम मुल्कों से माली तआउन मिलता है?।

जवाबः सऊदी अरब, कुवैत और उनके अलावा दूसरे खलीजी मुल्कों से सिर्फ सियोल की जामे कबीर के लिये इम्दाद आती है, इसके अलावा दूसरी मसाजिद जो दूसरे शहरों में हैं उन के जुम्ला अखराजात वहां मुकीम गैर मुल्की मुस्लिम बाशिन्दे बरदाश्त करते हैं।

सवालः कोरियाई बाशिन्दों के कबूले इस्लाम के बाद उनकी तर्बियत का आपके पास क्या इन्तिजाम है ?

जवाबः हम उनके दरमियान मुतअद्दिद तालीमी व सकाफती प्रोग्राम मुनअकिद करते रहते हैं। इन प्रोग्रामों में अकीद–ए–इस्लामी, से मुतअल्लिक उमूर की शरह व तौजीह पर खास तवज्जुह दी जाती है। नौ मुस्लिमों को अरबी ज़बान सिखाने का भी एहतिमाम किया जाता है ताकि वह नमाज़ में कुर्आने पाक पढ़ सकें। मैं यह बात वाज़ेह करना चाहता हूँ कि जब कोई कोरियाई इस्लाम कबूल करता हैं तो हम उनके लिए दो माह तक लिये तहारत और नमाज़ वगैरह के मसाइल की तर्बियत का एहतिमाम करते हैं, इस तर्बियती कोर्स में बाज़ अहम इस्लामी तालीमात की वजाहत कर दी जाती है।

(तामीरे हयात 10 फरवरी 2011)

❑❑

मानवता के उदाहरण

—इदारा

मेरे गाँव में फूल बासा नाम की एक पासिन रहती थी, उसकी गोद में एक साल का एक बच्चा था, एक जवान बेटी थी, शौहर का देहान्त हो चुका था, तीनों एक कच्चे घर में रहते थे, गर्मी का ज़माना था, एक दिन उसके घर में आग लग गई। माँ बेटी कथरी बिछौना लेकर बाहर आ गईं। बच्चा अन्दर कोठरी में सोता रह गया, दरवाज़े का छप्पर जल रहा था। गाँव के लोग आग बुझाने दौड़ पड़े थे और आग बुझा रहे थे। फूल बांसा अपने बच्चे के लिए इस तरह रो रही थी कि देखा न जा रहा था। दरवाजे के ऊपर छप्पर जल रहा था इस लिए अन्दर घुसकर बच्चे को निकाला नहीं जा सकता था, लेकिन मेरे दादा रौनक अली ने फूल बासा की गन्दी कथरी को पानी से भिगोया और उसे ओढ़ कर जलते दरवाजे में घुस गये, अभी बच्चे तक आग नहीं पहुँची थी बच्चे को उठा कर कथरी में छुपा कर जलते दरवाजे से हिफाजत के साथ बाहर लेकर आ गये। चूंकि नंगे पैर थे इसलिये पैरों में छाले पड़ गये।

फूल बासा जब तक जीवित रही दादा रौनक अली को दुआएं देती रही।

राम लाल की लड़की कुएं से पानी निकाल रही थी, पैर फिसल गया, कुएं में गिर गई। कुएं में पानी बहुत जियादा था, डूबने लगी, मेरा भाई इफ्तिखार हुसैन उधर से गुजरा और सुना कि लोग कह रहे थे "डूब गई, डूब गई"। इफ़्तिखार हुसैन किसी रस्सी की मदद के बिना, झट कुएं में कूद गया, वह अच्छा तैरना जानता था, लड़की को खुद तैरते हुए पकड़ लिया और आवाज दी कि रस्सी लटकाओ, रस्सी लटकाई गई, उसने लड़की को रस्सी से बांधा और आवाज़ दी कि खींचो, लड़की सीने से बंधी हुई थी। कई लोगों ने मिलकर खींचा और बाहर निकाला। इफ़्तिखार हुसैन भी एक रस्सी द्वारा बाहर आया।

लड़की को उल्टा लटकाकर जो पानी पी गई थी निकाला गया। इस तरह लड़की की जान बच गई। राम लाल अपने जीवन भर मेरे भाई इफ्तिखार हुसैन का एहसान मानता रहा।

ठाकुर नन्द किशोर की चक्की चल रही थी, उनके जवान भतीजे का अगोंछा जो गरदन से लटक रहा था पट्टे में फंस गया और करीब था उसकी जान चली जाती लेकिन मेरे भाई कियामुद्दीन ने दौड़ कर मज़बूती से पट्टा पकड़ लिया और दूसरे आदमी ने दौड़ कर बिजली बन्द की, कियामुद्दीन की उंगली कट गई लेकिन नन्द किशोर के भतीजे की जान बच गई। नन्द किशोर और उनके घर वाले हमेशा कियामुद्दीन का एहसान मानते रहे। ❑❑

आदर्श शासक.....

सरकारी खज़ाने से आवश्यकतानुसार धन दिलवाया और वह यात्री खिले मन से घर लौटा।

लोगों ने बताया कि ये हज़रत अली रज़ि0 के शासनकाल की घटना है। और वह जौ की रोटी खाने वाला व्यक्ति महान सम्राट हज़रत अली रज़ि0 हैं।

ये घटना हमारे शासक वर्ग के लिए आदर्श है। यदि शासक वर्ग ऐसी घटनाओं से सीख लेकर काम करें तो निश्चित ही अनेक विसंगतियों से छुटकारा मिल जाएगा। ❑❑

(देवनागरी लिपि में उर्दू)

सहाबा रज़ि० के हुकूक व आदाब

खालिद फैसल नदवी

अनु० अब्दुर्रहमान खान दरियाबादी

अल्लाह तआला का फरमान है कि " मुहाजिरीन व अन्सार में से जो सबसे पहले (ईमान लाने में) सबकत करने वाले हैं, और फिर जिन लोगों ने एहसान व इख्लास के साथ उनकी पैरवी की है, अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी हो गये, और वह सब (भी) अल्लाह तआला से राज़ी हो गये, और अल्लाह तआला ने उन सबके लिये ऐसी जन्नतें तैयार कर रखी हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें यह हमेशा हमेशा रहेंगे यही बड़ी कामयाबी है"। बिला शुब्हा सहाबा रज़ि० दीन इस्लाम के तर्जुमान व अलमबरदार, कुर्आन के मुहाफिज व पासबान सुन्नते नबवी के आमिल व मुबल्लिग, बुलन्द सीरत व किरदार के हामिल व दाओ और उम्मते मुस्लिमा के मुहसिन व मेमार हैं। यही वजह है कि उम्मते मुस्लिमा में उनको बड़ा ऊँचा मुकाम व मर्तबा हासिल है, क्योंकि अल्लाह तआला की खुसूसी हिदायत व रहनुमाई और हजरत सल्ल० की मिसाली तालीम ने उनको मुकम्मल इस्लामी साँचे में ढ़ाल कर पूरी उम्मते मुस्लिमा बल्कि पूरी इन्सानियत के लिए बेहतरीन नमूना बना दिया था, कुर्आन मजीद में है कि "और इसी तरह हमने तुम मोमिनों को एक मुतवाजिन उम्मत बनाया है ताकि तुम दुनिया के आम लोगों पर गवाह रहो" और यह बात काबिले जिक्र है कि शरीअत की इस्तिलाह में सहाबी उस आदमी को कहते हैं जिसने हालते इस्लाम में हजरत रसूलुल्लाह सल्ल० को देखा हो या उसे आप सल्ल० की सोहबत नसीब हुई हो ख्वाह–एक लम्हे के लिये क्यों न हो।

सहाबा रज़ि० की कुल तादाद हजरत रसूलुल्लाह सल्ल० की वफात के वक्त कमोवेश एक लाख चौबीस हज़ार थी, और जिन सहाब रज़ि० से कुतुब हदीस में रिवायत मन्कूल है, उनकी तादाद साढ़े सात हजार है। और उन सहाबा रज़ि० का तआरुफ हजरत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी के कलम ने क्या खूब कराया है कि–

"आप सल्ल० के तैयार किये हुए अफराद में से एक–एक नुबुवत का शाहकार है और इन्सानियत के लिये बाइसे शर्फ व इफ्तिखार है। इस पूरी कायनात में पैगम्बरों को छोड कर उनसे ज्यादा हसीन व जमील, उनसे ज्यादा दिलकश व दिल आवेज तस्वीर नहीं मिलती, जो उनकी जिन्दगी में नज़र आती है, उनका पुख्ता यकीन, उनका गहरा इल्म, उनका सच्चा दिल, उनकी बेतकल्लुफ ज़िन्दगी, उनकी बेनफ्सी खुदातरसी, उनकी पाकबाज़ीं, पाकीजगी, उनकी शफकत, उनकी शुजाअत, उनका जौके इबादत और शौके शहादत, उनकी शबजिन्दादारी, उनकी सीम व जर से बेपरवाई और उनकी दुनिया से बेरगबती, उनका अदल, उनका हुस्ने इन्तिजाम दुनिया की तारीख में अपनी नजीर नहीं रखता। मुख्तलिफ कबाइल, खानदानों और हैसियतों के अफराद, एक खुश उसलूब में तब्दील हो गये, और इस्लाम की इन्कलाब अंगेज तालीम और रसूल सल्ल० की मोजिज़ाना सोहबत ने उनको शीर व शकर बना दिया।

और एक गैर मुस्लिम मगरिबी फाजिल "कायतानी" अपनी किताब (सनीने इस्लाम) में सहाबा रज़ि० को बेहतरीन खिराजे तहसीन पेश करते हुए रकम तराज है कि यह लोग रसूल सल्ल० की अख्लाकी विरासत के सच्चे नुमाइन्दे, मुस्तक्बिल में इस्लाम के मुबल्लिग और मुहम्मद सल्ल० ने खुदा रसीदा लोगों तक जो तालीमात पहुँचाई थीं, उसके अमीन थे, रसूल

सल्ल0 की मुसलसल कुरबत और उनसे मुहब्बत ने उन लोगों को फिक्र व जज़्बात के एक ऐसे आलम में पहुँचा दिया था, जिससे आला और अच्छा माहौल किसी ने देखा नही था, दर हकीकत उन लोगों में हर लिहाज़ से बेहतरीन बदलाव हुआ था, और बाद में उन्होंने जंग के मवाके पर मुश्किल तरीन हालात में उस बात की शहादत पेश की कि मुहम्मद सल्ल0 के उसूल व अफकार का बीजारोपण उपजाऊ ज़मीन में की गई थी, जिससे बेहतरीन सलाहियतों के इन्सान वजूद में आये, यह लोग मुकद्दस किताब कुर्आन मजीद के अमीन–और उसके हाफिज थे और आप (सल्ल0) से जो लफ्ज या हुक्म उन्हें पहुँचा था, उसके ज़बरदस्त मुहाफिज़ थे।

इस तरह हदीसों में सहाबा रज़ि0 के हवालात बहुत तफसील के साथ मजकूर हैं कि सहाबा रज़ि0 तमाम इन्सानों से बेहतर हैं, एक हदीस शरीफ में आप सल्ल0 ने इरशाद फरमाया है कि सबसे बेहतर मेरे ज़माने के लोग हैं, एक दूसरी हदीस में आप सल्ल0 ने फरमाया कि तुम लोग तमाम रूये ज़मीन के इन्सानों से बेहतर हो, सहाबा रज़ि0–अल्लाह–तआला के चुने बन्दे हैं, इसीलिए आप (सल्ल0) का फरमान है कि अल्लाह तआला ने अम्बिया के अलावा तमाम मख्लूक़ में से मेरे सहाबा को छांटना है और उनमें से मुमताज़ अबूबक्र, उमर, उस्मान, और अली हैं। उनको मेरे सब सहाबा से अफजल करार दिया है। कुर्आन व हदीस में सहाबा रज़ि0 के कुछ हुकूक व आदाब बयान हुए हैं, उनमें से काबिले ज़िक्र अहम हक यह है कि उनकी ताजीम व तकरीम की जाये, क्योंकि सहाबा रज़ि0 के इकराम का हुक्म आप सल्ल0 ने अपनी उम्मत को बिल्कुल वाजे अन्दाज़ में दिया है। आप सल्ल0 का इरशाद है कि "मेरे सहाबा का इकराम करो क्योंकि सहाबा तुम तमाम में सबसे ज्यादा बेहतर हैं" सहाबा के इकराम का तकाज़ा ये है कि उनके तज़किरे के समय उनका पूरा–पूरा पास व लिहाज़ रखा जाये। आप (सल्ल0) का इरशाद है कि "जो सहाबा के बारे में मेरी रियायत करेगा, मैं कयामत के दिन उसका मुहाफिज़ बनूँगा" एक दूसरी हदीस में आप सल्ल0 का इरशाद है कि "जो मेरे सहाबा के बारे में रिआयत रखेगा वह मेरे पास हौजे कौसर पर पहुँच सकेगा, और जो उनके बारे में मेरी रिआयत न करेगा, वह मेरे पास हौजे कौसर तक नहीं पहुँच सकेगा, और मुझे दूर ही से देखेगा" एक हदीस में बहुत ही जामे अन्दाज़ में मोमिनों को बताया गया है कि "अल्लाह तआला से मेरे सहाबा रज़ि0 के बारे से डरो, अल्लाह तआला से मेरे सहाबा के सिलसिले में डरो, मेरे बाद उनको मलामत का निशाना मत बनाओ, जो शख्स उनसे मुहब्बत रखता है, मेरी मुहब्बत की वजह से उनसे मुहब्बत रखता है और जो उनसे नफरत रखता है वह मुझसे नफरत रखता है"। एक दूसरी हदीस में है कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि "मेरे सहाबा को बुरा मत कहो अगर तुम मे से कोई आदमी उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च करे तब भी वह उनके बराबर नहीं पहुँच सकता है"। सहाबा रज़ि0 का दूसरा अहम तरीन हक यह है कि उनके आमाल व अफआल में और उनके अख्लाक़ में उनकी पैरवी की जाये। इसी तरह हदीसों में उनकी पैरवी की ताकीद हुई है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि हमारी उम्मत में तिहत्तर फिरके होंगे जिनमें से एक फिरका जन्नत में जायेगा, सहाबा रज़ि0 ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सा फिरका होगा जो जन्नत में जायेगा? अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि जो फिरका उस रास्ते पर जाएगा जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं। आप सल्ल0 का फरमान है कि मैं तुम लोगों में

शेष पृष्ठ.....36 पर

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः अगर ज़च्चा बच्चा की जान को प्रसव के समय खतरा हो, और डॉक्टर ऑप्रेशन जरूरी करार दे और मर्द डॉक्टर ऑप्रेशन करे, जिसमें बे पर्दगी होती है तो क्या शरअन इसकी इजाज़त होगी?

उत्तरः इस्लामी शरअ में बिला शुब्हा पर्दे की बड़ी ताकीद है और जहां तक हो सके इस पर अमल वाजिब है, लिहाजा पहले लेडी डॉक्टर ढूंढना चाहिये और उससे रुजुअ करना चाहिये, लेकिन अगर लेडी डॉक्टर न मिल सके तो जितनी ज़रूरत हो, मर्द डॉक्टर से मदद ली जा सकती है उलमा ने जरूरत के वक्त इसकी इजाज़त दी है।

(हाशियः सहीहुल बुखारी 1/406)

प्रश्नः क्या नर्सिंग का काम मुस्लिम खातीन कर सकती हैं, आजकल अस्पतालों में मुसलमान औरतें भी इस काम पर मामूर होती हैं और यह खुली बात है कि बे पर्दगी भी होती है वहां बे पर्दगी से बचना दुश्वार है क्या शरअन इसकी इजाज़त है?।

उत्तरः अगर औरतें नर्सिंग का काम औरतों के वार्ड में अंजाम दें और इस्लामी अहकाम व पर्दे का लिहाज़ कर सकें तो बिला शुब्हा इसकी इजाज़त होगी, लेकिन मर्दों के वार्ड में बे पर्दगी के साथ शरअन इसकी इजाज़त नहीं होगी, अलबत्ता ग़ैर मामूली हालात में जैसे जंग वगैरह या आसमानी व ज़मीनी आफात के मौके से जहां मर्द मरहम पट्टी और जख्मों की तीमारदारी के लिये न फराहम हों तो औरतें भी पर्दे के साथ यह काम अंजाम दे सकती हैं। बुखारी शरीफ में यह रिवायत मौजूद है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के ज़माने में जंग के मौके पर औरतें जख़्मियों की मरहम पट्टी के काम में मदद करती थीं।

(बुखारी शरीफ 1/403)

प्रश्नः मौजूदा दौर में औरतों की तरह मर्द भी ब्लेड़ प्रेशर हार गले में इस्तेमाल करते हैं क्या शरअन इसकी इजाज़त है ?

उत्तरः पहली बात तो यह है कि माहिर डॉक्टर से मालूम किया जाए कि उस हार से या कड़े से ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल होता है या नहीं, अगर डॉक्टर तस्दीक करे तो हार के बजाए हाथ का कड़ा इस्तेमाल करें ताकि औरतों से मुशाबहत से बच सकें लेकिन अगर डॉक्टर तस्दीक न करे तो उसे टोटका समझें और उससे बचें। तजुर्बे से भी यह साबित हो जाए कि किसी हार या कड़े से ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल हो जाता है तब भी मर्दों को चाहिए कि हार के बजाए चैन इस्तेमाल करें।

प्रश्नः क्या किसी मुसलमान के लिए खून चढ़वाना दुरुस्त है जब कि खून नजिस होता है ?।

उत्तरः खून बिला शुब्हा नजिस होता है और इन्सानी जिस्म का एक जुज़ हुआ करता है। इसी लिये आम हालात में इसका जिस्म में चढ़ाना जाइज़ नहीं, लेकिन अगर ऐसी सूरत हो कि जान का बचाना खून चढ़ाने ही से मुमकिन हो तो शरअन इसकी इजाज़त है, उलमा ने जरूरत पर इसकी इजाज़त दी है।

(फतावा हिन्दिया 5/355)

प्रश्नः क्या मरीज को खून दिया जा सकता है ?

उत्तरः अगर किसी मरीज़ की जान खून चढ़ाये बिना बचाना मुमकिन न हो तो [illegible] रज़ाकाराना तौर पर खून दिया जा सकता है, अलबत्ता खून का बेचना जाइज़ नही है। हाँ अतिया के तौर पर

खून न मिले और पैसा लिये बिना कोई खून देने के लिए तैयार न हो तो मजबूरन खून खरीदना जाइज़ होगा लेकिन खून का बेचना जाइज़ नहीं।

(जवाहिरुल फिक्ह 1/34)

प्रश्नः क्या ब्लड बैंक में खून जमा किया जा सकता है, आज कल कुछ मुस्लिम तंजीमों की तरफ से उसकी तरगीब दी जाती है तो क्या वहां जा कर खून जमा करने की शरअन इजाज़त है ?

उत्तरः ब्लड बैंक में उस वक्त अतिये के तौर पर खून जमा किया जा सकता है जब कि यकीनी तौर से मालूम हो कि यह खून ज़रुरत मन्द मरीज़ों को ही उनकी जान बचाने के लिये दिया जाता है वर्ना नहीं, अगर कोई माहिर मुस्लिम डॉक्टर किसी मरीज़ के लिये जिस्म में खून चढ़ाने को जरूरी करार दे तो ऐसे मरीज को पैसा लिये बिना खून देने की इजाज़त होती है, तो इस मकसद के लिए ब्लड बैंक में खून जमा किया जा सकता है।

(फतावा हिन्दिया 5/355)

प्रश्नः विलादत के मौके की परेशानी के पेशे नज़र अगर कोई औरत हमल गिरवाए तो शरअ में इसकी गुंजाइश है या नही ?

उत्तरः अगर हमल से माँ की जान को खतरा या शदीद नुक्सान का अंदेशा न हो और न ही पैदा होने वाले बच्चे के बारे में इसका अन्देशा हो बल्कि जच्चगी के वक्त की परेशानी से हमल गिरवाया जाए तो यह गुनाहे कबीरा है और तमाम उलमा के नजदीक मना और हराम है।

(फतहुल अली अल् मालिकी 1/344)

प्रश्नः मस्जिद किस को कहते हैं? क्या मस्जिद के लिये इमारत का होना शर्त है? एक साहिब का कहना है कि बिना इमारत के खुली जगह सहन वगैरह मस्जिद नहीं कहलाएगी, क्या खुली जगह जहां नमाज़ बा जमाअत होती हो मस्जिद नहीं कहलाएगी ?

उत्तरः मस्जिद ऐसी जगह को कहते हैं जिसको किसी मुसलमान ने खालिस अल्लाह के लिये फर्ज नमाज़ अदा करने के लिए वक्फ कर दिया हो, उस पर इमारत और छत वगैरह होना शर्त नही है। अल्लामा तहतावी ने सराहत की है कि किसी जगह को मस्जिद करार दिये जाने के लिये इमारत का होना शर्त नहीं है।

(देखिये तहतावी 536)

प्रश्नः साबिक मुतवल्ली के पास मस्जिद की कुछ रकमें हैं वह अदा नही कर पा रहे हैं क्या मौजूदा मुतवल्ली उस रकम को मुआफ कर सकते हैं ?

उत्तरः मुतवल्ली के जिम्मे मस्जिद की निगरानी और मसालेह मस्जिद का तहफ्फुज़ है। मस्जिद की जायदाद या रकम बर्बाद करना या मुआफ करना मसालेह मस्जिद के खिलाफ है इसलिए मुतवल्ली को रकम मुआफ करने का हक नहीं है। (रद्दुलमुह्तार 4/407)

प्रश्नः एक गाँव में मस्जिद के अहाते में कुआँ है, क्या आम लोगों को इससे फायदा उठाने की इजाज़त दी जा सकती है या नही? जिन हजरात ने मस्जिद और कुआँ बनवाया अब बाहयात नहीं, उनकी मंशा भी मालूम नहीं है तो ऐसी सूरत में क्या इजाज़त दी जा सकती है?

उत्तरः चूंकि कुआँ मस्जिद के अहाते में है, अगर पहले से इजाज़त नही रही है और पहले आम लोग उससे पानी नही लेते रहे हैं तो उस कुऐं को अब वक्फे आम करके आम लोगों को फायदा उठाने की इजाज़त नही दी जा सकती, मस्जिद के अहाते के अंदर होना इस बात की अलामत है कि यह वक्फे आम नहीं बल्कि मस्जिद के लिये खास है।

प्रश्नः कुछ लोग जुहर और अस्र की नमाज के बाद मस्जिद ही में सोये रहते हैं और वक्त होने पर नमाज़ अदा करते हैं, जब उनसे कहा जाता है कि इस तरह सोने से मस्जिद की हुरमत बाकी नही रहती बल्कि मुसाफिरखाना मालूम

होता है तो वह जवाब देते हैं कि हम लोग नमाज के इन्तिजार में मस्जिद में रहते हैं, सवाल यह है कि क्या इस तरह मस्जिद में सो लेने की इजाज़त होगी ?।

प्रश्नः मस्जिद में एतिकाफ करने वाले और मुसाफिर को सोने की इजाज़त है, मुकामी लोग जमाअत के इन्तिज़ार में एतिकाफ की नियत से सो सकते हैं, लेकिन मस्जिद में बिस्तर डालकर मुसाफिरखाने की तरह सोना दुरुस्त नही है। हर हाल में आदाबे मस्जिद का लिहाज़ रखना जरूरी है।

(फतावा आलमगीरी 5/321)

प्रश्नः एक कालोनी में कुछ मुसलमान रहते हैं, वहां मस्जिद नहीं है तमाम लोग सरकारी मुलाज़िम हैं, इतवार को एक साहब के मकान पर सब जमा होते हैं ताकि कुछ दीन की बातें हों, इस मकान के एक कमरे में सब जमाअत से उस दिन नमाज़ अदा करते हैं, साहिबे मकान ने वक्तन फवकतन आने वाले और खुद अपने घर वालों के लिये नमाज़ पढ़ने के लिये इस कमरे को खास कर दिया है सवाल यह है कि क्या इस कमरे की हैसियत मस्जिद की हो गई है ? क्या इस पर मस्जिद के अहकाम जारी होंगे, कुछ हज़रात का ख्याल यह है कि यह मस्जिद है इस लिये मस्जिद के अहकाम नाफिज होंगे।

उत्तरः साहिबे मकान ने इस कमरे को अगर मस्जिद की नीयत से नमाज़ के लिये खास किया है और लोगों की इसी मक्सद से नमाज अदा करने की इजाज़त दी है तो यह कमरा शरई मस्जिद होगा और मस्जिद के अहकाम उस पर नाफिज होंगे, लेकिन अगर इस कमरे को अपनी मिल्कियत में बाकी रखते हुए महज नमाज़ अदा करने के लिये खास किया है तो यह शरई मस्जिद नहीं कहलाएगी और मस्जिद के अहकाम इस पर नाफिज़ नही होंगे।

(रद्दुल मुहतार 4/341)

प्रश्नः एक मस्जिद की किराये के मकानात और दुकाने हैं और उनकी आमदनी आए दिन बढ़ती जा रही है, मस्जिद के अखराजात से आमदनी काफी ज्यादा है, सवाल यह है कि एक मस्जिद की जायद आमदनी दूसरी मस्जिद में मुन्तकिल कर सकते हैं या नही?

उत्तरः अस्ल तो यही है कि एक वक्फ की आमदनी दूसरे वक्फ में मुन्तकिल करना दुरुस्त नही है, लेकिन अगर वक्फ नामे में सराहत हो कि अगर मस्जिद की आमदनी जायद हो तो दूसरी मस्जिदों में उसे मुन्तकिल कर सकते हैं, तो वाकिफ की सराहत की बिना पर जायद आमदनी दूसरी मसाजिद में मुन्तकिल की जा सकती है, लेकिन याद रहे कि वक्फ की गरज़ और मक्सद का लिहाज और उसकी शरायत की पाबन्दी जरूरी है।

(रद्दुल मुहतार 3/515)

प्रश्नः एक मस्जिद के सहन में कब्र वाके है, कब्र को पाट कर अगर मस्जिद में दाखिल किया जाए तो उस पाटे हुए हिस्से पर मस्जिद का इतलाक होगा या नही? और उस पर नमाज पढने से मस्जिद का सवाब मिलेगा या नही ?।

उत्तरः जिस कदर जमीन कब्र की है उतनी जगह पर नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी, हां अगर छत पाट कर बालाई हिस्से में नमाज़ पढ़ी जाए तो कोई हर्ज नहीं। (फतावा हिन्दिया 5/320) मगर कब्र और उसके ऊपर का हिस्सा मस्जिद में दाखिल नहीं होगा और न मस्जिद का सवाब होगा।

(रद्दुल मुहतार 1/353)

प्रश्नः एक मस्जिद गैर मुस्लिम आबादी में है, वहां अब मुसलमान नहीं बसते हैं, मस्जिद बिल्कुल वीरान है, इमारत भी गिर गई है, सिर्फ निशानात और दीवार के कुछ हिस्से बाकी हैं, बाज़ गैर मुस्लिम उसे खरीदना चाहते हैं, मुसलमानों ने यह मशवरा किया है कि इस जगह को बेच दिया जाए और इसके बदले मुस्लिम

आबादी में मस्जिद बना दी जाए, और यह इस मसलिहत से करना चाहते हैं कि अगर मस्जिद की जगह नहीं बेचते हैं तो मुसलमान इसको आबाद भी नहीं कर पाएंगे, और गैर मुस्लिम कब्जा कर लेंगे। शरई हुक्म क्या है? आगाह करें।

उत्तरः मस्जिद की जगह चाहे वीरान हो और मुस्लिम आबादी वहां हो या न हो, वह जगह हर हाल में मस्जिद ही के हुक्म में है, और कियामत तक रहेगी। अल्लामा हसकफी रह0 ने दुर्रे मुख्तार में लिखा है (अनुवादः वह जगह कियामत तक मस्जिद ही रहेगी चाहे वह वीरान हो जाए और उसके इर्द गिर्द आबादी हो या न हो) मुसलमानों की यह ज़िम्मेदारी है कि उस जगह को आबाद करें, पाँचों वक्त न पढ़ सकें तो कम से कम जुमे की नमाज़ पढ़ कर आबाद करने की कोशिश करें, यह भी मुमकिन न हो तो उसके चारों ओर दीवार बना दी जाए ताकि गन्दगियों और ग़लत इस्तेमाल से हिफाज़त हो सके, मुसलमानों को चाहिये कि अपने इम्कान भर उस मस्जिद की जगह पर किसी और काम के लिये मुस्लिम या गैर मुस्लिम किसी को कब्जा न करने दें।

प्रश्नः एक मस्जिद बहुत पुरानी है, काफी बोसीदा हो चुकी है अब दोबारा बनाई जा रही है, और मज़ीद तौसी (बढ़ाया जाना) भी होनी है, कमेटी का मशवरा हो रहा है कि नीचे तहखाना बना दिया जाए और उसी में वुजू खाना बना दिया जाए। क्या ऐसा करना दुरुस्त है?।

उत्तरः जितनी जगह पहले मस्जिद थी उसके नीचे तहखाना में वुजू बनाना दुरुस्त नही है, क्योंकि फुकहा ने सराहत की है कि जो जगह मस्जिद बन जाती है वह तहतुस्सरा से आसमान तक मस्जिद के हुक्म में हो जाती है (अल–बहरूर्राइक 5/249) हाँ तौसी वाले हिस्से में जहाँ पहले मस्जिद नहीं थी अब मस्जिद बनती है तो उसके नीचे तहखाना में वुजूखाना बनाया जा सकता है, फुकहा ने सराहत की है कि मस्जिद के मसालेह (हित) की खातिर मस्जिद की बिना के वक्त अगर नीचे अगर नीचे तहखाना बनाया जाए तो ये जायज़ है, वुजूखाना मस्जिद के मसालेह में है इसलिए इसकी इजाज़त होगी। (रद्दुलमुहतार 3/512)

प्रश्नः गैर मुस्लिम का चंदा मस्जिद की तामीर में लगाना दुरुस्त है कि नही?।

उत्तरः अगर गैर मुस्लिम कारे सवाब समझकर चंदा दे रहे हों और उनके चंदा कबूल करने में मफासिद (खराबियों) का अन्देशा न हो "मसलन" इनके मुशरिकाना रुसूम व आमाल में इसकी वजह से चंदा देना न पड़े या मुसलमानों के सियासी इस्तेमाल (शोषण) का अन्देशा न हो तो तामीरे मस्जिद में गैर मुस्लिम का चंदा कबूल करना दुरुस्त होगा।

प्रश्नः एक गाँव में एक बहुत पुरानी मस्जिद है और बोसीदा हो गई है, लोगों ने उसे शहीद कर दिया है। इसमे मजीद तौसी की जरूरत थी लेकिन तौसी के मसअले की वजह से दूसरे मुहल्ले वालों ने अपने मुहल्ले में एक नई मस्जिद बना ली, और इसमें नमाज़ अदा कर रहे हैं, मुखालिफ मुहल्ले वाले इस नई मस्जिद को मस्जिदे जिरार कहते हैं, क्या इनका यह कहना दुरुस्त है, क्या इस नई मस्जिद में नमाज़ दुरुस्त न होगी ?।

उत्तरः पुरानी मस्जिद में अगर तमाम नमाज़ियों की गुंजाइश न हो और तौसी भी दुश्वार हो या मस्जिद दूसरे महल्ले वालों के लिये इतनी दूर हो कि जमाअत में शरीक होना दुश्वार हो या मुस्तकिल फित्ने व फसाद से बचना मक्सूद हो अगर इन मसालेह के पेशे नज़र नई मस्जिद बनाई जाए तो इसे मस्जिदे जिरार नही कहा जा सकता बल्कि यह मस्जिद शरई होगी इस पर मस्जिद के तमाम अहकाम जारी

शेष पृष्ठ .....34 पर

ख़ुदकुशी की अस्ल वजह सोच की ख़राबी

—ज़हीर ललितपुरी

ख़ुदकुशी की मौत, किसी भी धर्म, मज़हब, दीन और सभ्य समाज में जायज़ नहीं है। दुनिया के किसी भी देश का क़ानून, किसी नागरिक को ख़ुदकुशी करके मरने की इजाज़त नहीं देता। किन्तु प्राचीनकाल में ख़ुदकुशी करने वाले इन्सान इतने ज़्यादा नहीं होते थे जितने आजकल हैं। पिछले दिनों हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2009 में भारत में लगभग एक लाख सत्ताइस हज़ार व्यक्तियों ने ख़ुदकुशी के ज़रिये मौत को गले लगा लिया, जिनमें से लगभग साढ़े सत्तर हज़ार किसान थे। अपने आपको किसानों का देश, खुशहाल, तरक्कीशुदा, भविष्य का सुपर पावर देश तथा दुनिया की सबसे बड़ी जम्हूरियत का अलमबरदार माने जाने वाले देश में ख़ुदकुशी करके मरने वालों की तादाद बढ़ना सिर्फ अफ़सोसनाक ही नहीं बल्कि दर्दनाक और शर्मनाक भी है।

ताहम इस सवाल पर ग़ौर करना निहायत ज़रूरी है कि वे कौन से कारण हैं जो हमारे मुल्क के ज़िन्दादिल इन्सानों को निराश कर अपने आपको हलाक करने के लिए मजबूर कर देते हैं। अमूमन ख़ुदकुशी की वजह ग़रीबी, भुखमरी, तंगहाली और बेरोज़गारी मानी जाती है। लेकिन अपराध रिकार्ड ब्यूरो की तरफ़ से जारी आँकड़ों पर गौर करने से मालूम होता है कि हमारे देश में ख़ानदानी तनाव और झगड़े आजकल ख़ुदकुशी की ख़ास वजह हैं। सन् 2009 में ख़ानदानी झगड़ों से परेशान होकर या अपने परिवार के लोगों की उपेक्षा का शिकार होने की वजह से ख़ुदकुशी करने वाले, ख़ुदकुशी की घटनाओं में मरने वाले कुल इन्सानों का चौबीस प्रतिशत यानी तीस हज़ार बियासी है।

इन आँकड़ों के अनुसार दहेज के लेन–देन की समस्या की वजह से 2008 के मुक़ाबले 2009 में ख़ुदकुशी की कम घटनाएं घटीं। 2008 में दहेज की वजह से तीन हज़ार अड़तीस ख़ुदकुशी की घटनाएं प्रकाश में आयीं थीं जबकि 2009 में दो हज़ार नौ सौ इक्कीस ख़ुदकुशी घटनाएं घटित हुईं। यौन अत्याचार की वजह से तीन सौ बीस, प्यार के मामले में नाकामी की वजह से तीन हज़ार सात सौ ग्यारह, अनचाहे गर्भ की वजह से एक सौ इकतालीस और इम्तिहान में नाकाम होने की वजह से दो हज़ार दस व्यक्ति ख़ुदकुशी करने के लिए मजबूर हुए। उक्त वर्ष में ग़रीबी की वजह से दो हज़ार नौ सौ सत्तासी और बेरोज़गारी की वजह से दो हज़ार चार सौ बहत्तर व्यक्तियों ने ख़ुदकुशी की, एवं ख़ुदकुशी की कुल मौतों की सत्तरह प्रतिशत घटनाओं की कोई वजह मालूम नहीं हो सकी। हमारे मुल्क में एक साल में होने वाली ख़ुदकुशी की घटनाएं जो तस्वीर बनाती हैं व काफ़ी चिंताजनक हैं और ज़हन में बेशुमार सवाल पैदा करती हैं।

ख़ुदकुशी की ये घटनाएं जो ख़ानदानी तनाव, आपसी रिश्तों में कशमकश की वजह से हुई हैं, हक़ीक़त में बहुत बड़ा सामाजिक मसला है। ख़ानदानों में बिखराव ने दौड़ती भागती ज़िन्दगी के सफ़र को और भी मुश्किल बना दिया है। वर्तमान आर्थिक बदलाव एवं पेचीदगियों ने ज़िन्दगी के हर मामले पर इतना असर डाला है कि अब कोई रिश्ता जोड़ने और निभाने से पहले नफ़ा–नुक़सान का गुणा भाग कर हिसाब–किताब किया जाता है और फिर उसके बाद, वक़्त और ज़रूरत के अनुसार, मौक़ापरस्ती और मतलबपरस्ती की

बुनियाद पर रिश्ते बनाए और बिगाड़े जाते हैं। आजकल इन्सानियत और हमदर्दी की कोई अहमियत नहीं हैं। अगर कोई फ़ायदा होता है तो पराये भी अपने हो जाते हैं और अगर कोई फायदा नहीं तो अपने भी पराये हो जाते हैं। आज का दौर, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर बहुत ही कठिन, इन्सानों के सब्र का इम्तिहान लेने और हौसलों को पस्त करने वाला दौर है। असाधारण आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियां, विसंगतियां और विडम्बनाएं किसी भी आफ़त के मारे अकेलेपन के शिकार इन्सान को अगर उसको अल्लाह की कुदरत और रहमत पर भरोसा नहीं तो ख़ुदकुशी के लिए आमादा कर सकती हैं।

ख़ानदानी वजहों के अलावा बीमारी से तंग आकर जान देना भी ख़ुदकुशी की ख़ास वजह है। बीमारी की वजह से सन् 2009 में छब्बीस हज़ार सात सौ इकत्तीस लोगों ने ख़ुदकुशी की जो उक्त वर्ष की ख़ुदकुशी की कुल घटनाओं का इकतीस प्रतिशत है। हालांकि एड्स से और दूसरी जिन्सी बीमारियों की वजह से ख़ुदकुशी करने वालों की तादाद में कमी होना इस बात की दलील है कि अगर लोगों को जागरूक किया जाए तो उसका फ़ायदा होता है। साल 2009 में एड्स तथा दूसरी जिन्सी बीमारियों यानी यौन रोगों की वजह से ख़ुदकुशी करने वाले छह हज़ार सत्तर रहे जबकि सन् 2008 में आठ सौ सत्तर लोगों ने इन बीमारियों से परेशान होकर ख़ुदकुशी की थी।

आर्थिक तंगी के कारण 2009 में तीन हज़ार एक सौ बासठ लोगों ने ख़ुदकुशी की जो 2008 के मुक़ाबले में छह प्रतिशत कम है। ख़ुदकुशी की इन घटनाओं के बारे में केन्द्र सरकार का कहना है कि उसने काश्तकारों और मज़दूरों की भलाई के लिए बहुत से क़दम उठाये हैं। ये हक़ीक़त भी है कि केन्द्र और विभिन्न प्रदेश सरकारों ने सिर्फ़ काश्तकारों और मज़दूरों के लिए ही नहीं बल्कि तमाम देहाती और शहरी पिछड़े हुए तबक़ों की भलाई के लिए और उनकी ज़िन्दगियों में सुधार के लिए प्रोग्राम चलाए हैं। फिर भी इन्सान अपने हालात से तंग आकर तथा दुनिया के इन्सानों से मायूस होकर, अपनी ज़िन्दगी से नफ़रत करने लगे हैं और भारी तादाद में ख़ुदकुशी कर रहे हैं, जो इन प्रोग्रामों के सामने सवालिया निशान लगाते हैं।

हालांकि ख़ुदकुशी के उपरोक्त आँकड़ों से मालूम होता है कि हमारे देश के लोगों की माली हालत बेहतर होने के बजाये और बिगड़ रही है, लेकिन इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि कुछ हद तक हमारे मुल्क के बाशिन्दों की माली हालत पहले से अच्छी हुई है। केन्द्र और सूबों की सरकारों की कोशिशों से उनकी हालत बदली है। किसानों के क़र्ज़ों की माफ़ी, देहातों में रोज़गार गारंटी योजना, गरीबों के लिए मकानों का निर्माण, स्कूलों में मिड–डे–मील वग़ैरह बहुत सारे कार्यक्रम हैं जिनसे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। आबादी बढ़ने और इन्सानों की माली हालत सुधरने से रोज़गार के अवसर भी बढ़े हैं। सेहत और दवाओं के मामले में काफ़ी सुधार हुआ है। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि हमारे मुल्क के हालात इतने ख़राब हैं जिनसे इन्सान निराश होकर ख़ुदकुशी करे।

लेकिन अपराध ब्यूरो की उपरोक्त आँकड़ों की प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से दी गयी रिपोर्ट कोई मामूली ख़बर नहीं है जिसे सुनकर अनसुना कर दिया जाए या सरसरी तौर पर पढ़कर नज़रअंदाज़ कर दिया जाए। उस मुल्क में जिसकी आबादी एक अरब से ज़्यादा है, एक लाख सत्ताइस हज़ार ख़ुदकुशी करने वालों की तादाद सरसरी

निगाह से देखने में कम दिखायी देती है किंतु ज़रा गहराई और संजीदगी से ग़ौर किया जाए तो हमको मालूम होता है कि यह तादाद हमारे मुल्क के किसी छोटे शहर या नगर अथवा किसी बड़े कस्बे की इन्सानी आबादी के बराबर है। इसका यह मतलब है कि हमारे मुल्क के एक नगर या कस्बे के तमाम नागरिकों ने एक साल के अन्दर खुदकुशी कर ली।

इस नज़रिये से सोचने पर महसूस होता है कि यह आँगड़े क्या दर्शाते हैं। वस्तुतः इस बुनियाद पर सिर्फ़ हुकूमत और प्रशासन ही नहीं बल्कि हर ज़िम्मेदार नागरिक की यह ज़िम्मेदारी है कि खुदकुशी पर आमादा इन्सान की परेशानी को सही वक़्त पर समझ कर उसको दूर करने की कोशिश करे और उस इन्सान को खुदकुशी जैसे कायरतापूर्ण काम एवं गुनाह से बचाए।

दरअस्ल इन्सान की मायूसी उसकी सोच की ख़राबी की वजह से पैदा होती है, क्योंकि बहुत सारी खुदकुशी की घटनाएं ग़रीबी या मजबूरी की वजह से नहीं होती, बल्कि कभी–कभी इन्सान किसी छोटी सी बात पर खुदकुशी कर लेता है। मौजूदा दौर में परेशान इन्सान अकेलेपन तथा अपने किसी ख़ास के दिल में अपनेपन व हमदर्दी की कमी और उपेक्षा की वजह से भी खुदकुशी कर लेता है। बहरहाल, जो लोग अल्लाह पर यक़ीन करते हैं और उसकी रहमत और कुदरत पर भरोसा करते हैं वे कभी मायूस होकर अपनी ज़िन्दगी से नफरत नहीं करते बल्कि ज़िन्दादिली, हिम्मत और हौसले के साथ हालात का मुक़ाबला करते हैं।

ताहम भारत को खुशमिज़ाज, हौसलामंद और ज़िन्दादिल इन्सानों का मुल्क माना जाता है। किन्तु समझदार, बुद्धिजीवी, शिक्षित और आर्थिक रूप से खुशहाल होते हुए भी अगर लोग अपनी क़ीमती ज़िन्दगी का मोल नहीं समझते हैं और अपने ग़मों से आजिज़ आकर अपनी ज़िन्दगी को खुद ही ख़त्म कर देते हैं तो यह उनकी बहुत बड़ी नादानी है। खुदकुशी करने वालों को यह नहीं मालूम होता है कि खुदकुशी करना बहुत बड़ा गुनाह है। इन्सान की ज़िन्दगी अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत हैं। दर हक़ीकत यह अल्लाह की अमानत है। इसलिए अल्लाह की मर्ज़ी के बिना इसको तबाह और बर्बाद करना व हलाक करना जायज नहीं है। किसी इन्सान का खुदकुशी करना इस बात की निशानी है कि उसे अल्लाह पर, उसके रहम और करम पर, उसकी कुदरत और ताक़त पर भरोसा नहीं है।

जब इन्सान चारों तरफ़ से मायूस हो जाने के बाद अल्लाह की ज़ात से भी मायूस हो जाता है तभी वह अपनी ज़िन्दगी को अपने ही हाथों से ख़त्म करता है। ज़ाहिर है कि खुदकुशी की एक ख़ास वजह कुफ़्र है, क्योंकि मायूस होना काफ़िर होने के समान है। अल्लाह तआला ने कुर्आन में भी फ़रमाया है कि "अल्लाह की रहमत से मायूस न हो उसकी रहमत से तो बस इन्कार करने वाले ही मायूस होते हैं।"

(सूरह युसुफः 87)

कान्ति साप्ताहिक से ग्रहीत

❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

होंगे, और इसमें नमाज़ दुरुस्त होगी, मस्जिदे ज़िरार वह मस्जिद कहलाती है जो मुसलमानों को नुकसान पहुँचाने और मुसलमानों के बीच फूट डालने की गरज से बनाई गई हो, जैसा कि मुनाफिकीन ने मस्जिदे कुबा के बिलमुकाबिल मस्जिद बनाई थी। जिसका मकसद इबादत अदा करना नहीं बल्कि मुसलमानों को नुकसान पहुँचाना और मुसलमानों की सफों में इन्तिशार व तफरीक पैदा करना था, अल्लाह तआला ने उसी मस्जिद को मस्जिदे ज़िरार कहा है।

(देखिए सूर–ए–तौबा की आयत 107)

❑❑

शिर्क की वास्तविकता

—मुहम्मद हसन नदवी

पूरी मानवता पर सबसे बड़ा एहसान तौहीद के अक़ीदे का है, क्योंकि इन्सान के सारे कामों की स्वीकृति का आधार इसी पर है, और तौहीद के अक़ीदे पर पानी फेर देने वाली चीज़ शिर्क का काम है। इसलिए कि इसकी नहूसत से इन्सान का अच्छे से अच्छा काम अल्लाह की निगाह में अस्वीकृत हो जाता है।

शिर्क का शाब्दिक अर्थ शरीक करने का और मिलाने का है, यानि एक से अधिक ख़ुदा मानना और उनको इबादत के योग्य समझना, और अल्लाह की विशेष विशेषताओं को अल्लाह के अलावा किसी और से जोड़ना, जैसेः ये समझना कि मौत व ज़िन्दगी का मालिक अल्लाह के अलावा कोई और भी हो सकता है, पानी कोई और बरसा सकता है, रोज़ी कोई और देता है, ज़रूरत पूरी करने वाला और मुश्किल दूर करने वाला कोई और है।

शिर्क ऐसा बदतरीन गुनाह है कि अगर इन्सान को तौबा के बग़ैर मौत आ गयी तो उसका ठिकाना हमेशा के लिये जहन्नम होगा, अल्लाह का इरशाद है "याद रखो जो व्यक्ति अल्लाह के साथ शिर्क करेगा, अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है" एक दूसरी जगह अल्लाह ने साफ़–साफ़ फ़रमा दिया है कि अल्लाह तआला शिर्क को माफ नहीं करेगा और उसके अतिरिक्त किसी गुनाह को चाहे तो माफ़ कर दे। एक जगह पर अल्लाह ने नबियों की बात करने के बाद फ़रमाया कि ये पाक ज़ातें जिनको हमने तौहीद की दावत के फ़र्ज़ को अदा करने की वजह से तमाम जहानों में फ़ज़ीलत दी थी, अगर फ़र्ज़ किया जाए कि वो भी शिर्क में लिप्त हो जाते तो उनके काम बेकार हो जाते और किया धरा भी बेकार हो जाता।

ऐसा इस वजह से है कि शिर्क इन्सानी अक़्ल व फ़ितरत के विरुद्ध एक घटिया अक़ीदा है, और मानव योग्यताओं को मिट्टी में मिला देने वाला काम है। किताब व सुन्नत की शिक्षा के मुकाबले में एक बग़ावत है और अक़्ली आधार पर भी इसके सही होने की कोई दलील नहीं है। बल्कि ये अल्लाह की ग़ैरत को जोश दिलाने वाली चीज़ है, इससे इन्सान की वो हैसियत व शराफ़त ख़त्म हो जाती है जो उसे ज़मीन की ख़िलाफ़त के सदक़े में मिली है। इसलिये कि जब इन्सान अल्लाह की मख़लूक को अपना माबूद और ज़रूरत पूरी करने वाला बनाता है तो वो अपनी इज़्ज़त व शराफ़त को घटाता है। क्योंकि अल्लाह ने सारे जहान की मख़लूक़ और कायनात की सारी चीज़ों को उसके खलीफ़ा के फ़ाएदे के लिये पैदा किया है। और ये उल्टा उनके सामने कटोरा लेकर खड़ा है! अल्लाह ने शिर्क की इस सतहियत को अपने कलाम में यूं बयान फ़रमाया है "ऐ लोगो! एक मिसाल दी जाती है कि, गौर से सुनो! जिन माबूदों को तुम ख़ुदा पुकारते हो वो सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें तो नहीं कर सकते बल्कि मक्खी अगर उनसे कोई चीज़ छीन ले तो वो उसे छुड़ा भी नही सकते, मदद चाहने वाले भी कमज़ोर, जिनसे मदद चाही जाती है वो भी कमज़ोर"।

हक़ीक़त ये है कि शिर्क कभी भी इन्सानी अक़्ल व ज़हन को सन्तुष्ट करने वाली चीज़ नही है। कोई भी मुशरिक अपने अक़ीदा के ग़लत होने पर ग़ौर करे तो उसका ग़लत होना उसके दिलों दिमाग़ पर स्पष्ट हो जाएगा, क्योंकि शिर्क का सारा मामला वहम परस्ती और

बाप व दादा के रस्मों रिवाज पर चलता है।

शिर्क की सबसे बदतरीन शक्ल में अल्लाह के लिये बीवियों और बेटे–बेटियों के अक़ीदे को भी शामिल किया गया है। सूरह मरियम की आयत में अल्लाह ने इस अक़ीदे के सम्बन्ध से अपने सख़्त गुस्से को प्रकट किया है, आयत का तर्जुमा है "वे कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया, सख़्त बेशर्मी की बात है जो तुम गढ़ लाये हो, क़रीब है कि आसमान फट पड़े, ज़मीन फट जाए और पहाड़ गिर जाए, इस बात पर कि लोगों ने रहमान के लिये औलाद होने का दावा किया है, रहमान की ये शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए।"

शिर्क की कमतर शक्ल "शिर्के ख़फ़ी" यानि पोशीदा शिर्क कही जाती है, ये इरादों और नियतों का शिर्क होता है जैसा कि रियाकारी और शोहरत इत्यादि, अल्लामा इब्ने क़ैय्यिम फ़रमाते हैं कि इरादों और नियतों का शिर्क तो ऐसा समुन्द्र है जिसका कोई किनारा नहीं, कम ही लोग इस से बच पाते हैं अल्लाह हम सब की हर किस्म के शिर्क से हिफ़ाज़त फ़रमाये और ईमान पर ख़ात्मा फ़रमाये। आमीन या रब्बुलआलमीन।

❖❖❖

सहाबा रज़ि0....................

अपने कयाम की मिकदार नहीं जानता, पस मेरे बाद दो सहाबा किराम की इकतिदा करना और आप सल्ल0 ने हजरत अबू बक्र और हज़रत उमर की तरफ इशारा फरमाया, और एक दूसरी हदीस में चारों खुलफाये राशिदीन की सुन्नत पर तरगीब दी है कि मेरी सुन्नत और खुलफाये राशिदीन की सुन्नत तुम तमाम पर वाजिब है, और उसको अपनी दाढ़ों से मजबूत पकड़ लो, सहाबा रज़ि0 के और भी हुकूक व आदाब हैं, उनमें सबसे ज़्यादा काबिले जिक्र अहम हक दिफाए सहाबा है, मौजूदा हालात में इस हक की अदाएगी बहुत जरूरी है, इस हक से फरारी बाअिस लानत है, चुनांचे एक हदीस में है कि जब फ़ित्ने या बिदआत जाहिर होने लगे और मेरे सहाबा को बुरा कहा जाने लगे तो आलिम को चाहिये कि अपने इल्म को काम में लाकर सहाबा रज़ि0 का दिफा करे और जो सहाबा रज़ि0 का दिफा नहीं करेगा, तो उस पर अल्लाह तआला की लानत, फरिश्तों की लानत और तमाम लोगों की लानत हो, और अल्लाह तआला न उसके फर्ज कुबूल फरमायेगा और न ही नफिल, बहर कैफ हजरत काजी अयाज़ ने अपनी मशहूर किताब में सहाबा रज़ि0 के अहम हुकूक बयान करते हुए क्या खूब तहरीर फरमाया है कि इन हजरात को बुराई से याद न करो, बल्कि उनकी खूबियाँ और उनके फजाइल बयान करो, और ऐब की बातों से सुकूत करो, जैसा कि हुजूर सल्ल0 का इरशाद है कि जब मेरे सहाबा का ज़िक्र हो तो सूकूत किया करो। सहाबा रज़ि0 तारीख साज अहद आफरी शख़्सीयत का मजमूआ हैं और यह हज़रात अल्लाह तआला की अजीम नेअमत और रसूल सल्ल0 की तरबियत के समरा और इस्लाम की सदाक़त की दलील व हुज्जत हैं, और यह हजरात, हजरत मसीह अलै0 की जबान में जमीन का नमक और पहाड़ी का चिराग थे, जिनसे उनकी हम अस्र दुनिया ने रूश्द व हिदायत का उमूर हासिल किया और आज की तारीकियों में भी उनकी बुलन्द सीरत व किरदार की शुआओं से हम अपनी जिन्दगियां मुनव्वर कर सकते हैं, और उनकी मिसाली ज़िन्दगी में अपनी दुनिया व आखिरत दोनों संवार सकते हैं, और दोनों जगह कामयाब हो सकते हैं, अल्लाह तआला हम तमाम मोमिनों को उनके नक्शे कदम पर खुलूस व एहसान के साथ चलने की तौफीक़ अता फरमाये।

आमीन!

❖❖❖

सिगरेट के धुएँ का छल्ला बनाकर

—उबैद अहमद सिद्दीक़ी

सिगरेट पीना यानी धूम्रपान करना बहुत बुरी आदत है, इसमें अच्छाई नाम की कोई चीज़ नहीं है, इसमें फायदे का कोई पहलू नहीं, यह धर्म और मानवीय शराफ़त के लिए भी बर्बादी है, और ये जिन्दगी के सुकून को तबाह व बर्बाद कर देती है।

डॉक्टरी रिसर्च के बाद अब पूरी बात सामने आ गई है। क्योंकि यह वह बला है जो इन्सान को दीमक की तरह खा रही है और सेहत की इमारत को गिरा रही है तथा जीवन को नर्क बना रही है। इस सिलसिले में जिसने भी डॉक्टरों की रिसर्च व राय जानी है वह मेरी बात से इन्कार नहीं कर सकता।

धूम्रपान करने वाला सिर्फ अपने आप को मौत के मुँह में नहीं ढकेलता बल्कि दूसरों की मौत का भी ज़िम्मेदार होता है। वह सिगरेट के गन्दे विषाणु लोगों तक पहुँचाता है और लोग सिगरेट के धुएँ से बच नहीं पाते और सांस लेना भी दुश्वार हो जाता है। "Research for Addiction attachement of london Institute for Psychiatry" की रिपोर्ट के आधार पर एक बार सिगरेट न पीने वाले 20 लोगों को ऐसे कमरे में जिस के अन्दर खिड़कियाँ और रौशनदान भी थे, धूम्रपान करने वालों के साथ लगभग एक घंटा बैठा कर फिर उनके खून की जाँच की गयी तो उनके खून में कार्बन डाई ऑक्साइड इतना बढ़ा हुआ था कि लगता था कि सभी ने सिगरेट पी है और नाक से धुआँ लिया है। इसी तरह पति के सिगरेट पीने से पत्नियाँ ज़्यादा फेफड़े के कैंसर से ग्रसित होती हैं। डॉक्टर ने अपनी किताब "धूम्रपान–दिल और जिन्स" में लिखा है कि धूम्रपान करने वाला एक व्यक्ति 30 साल के अन्दर जो सिगरेट पीता है वह 800 निकोटीन पर आधारित होता है, यह इतनी बड़ी मात्रा है कि 10,000 की आबादी वाले शहर को यह ज़हरीला कर सकती है। सिगरेट के अन्दर यही एक ज़हरीला पदार्थ नहीं होता बल्कि और भी इससे भयानक प्रभाव वाले पदार्थ होते हैं जिनका विवरण इस वक्त मुनासिब नहीं है। लेकिन यह भी समझ लेना चाहिए कि इस के धुएँ से सबसे ज़्यादा फेफड़े का कैंसर होता है और खून का दौरान रुक जाने की भी बीमारी होती है, जिससे हार्ट अटैक हो जाता है। और गुर्दे का मर्ज़ भी पैदा हो जाता है और वह आगे चल कर खराब हो जाता है। धूम्रपान से ही जुड़ा नस्लकुशी का मर्ज भी है क्योंकि वह पुरुष और महिला के जनन तंत्र को कमज़ोर और नाकारा बना देता है, यही नहीं बल्कि माँ के पेट में पलने वाले बच्चे पर भी असर पड़ता है, और गर्भपात होने का खतरा रहता है। सिगरेट का धुआँ 3000 रसायनों से बना हुआ होता है जिसमें हाइड्रोजन, कार्बन डाई ऑक्साइड, आक्रोलीन गैस, अमोनिया गैस आदि होती हैं। हेल्थ गाइडिंग के पहले एडिशन के सर्वे के मुताबिक धूम्रपान से मरने वालों की वार्षिक संख्या ढ़ाई मिलियन थी, लेकिन इसी किताब के दूसरे एडिशन के समय यह संख्या बढ़ कर चार मिलियन हो गयी। यूरोप के 70 प्रतिशत लोग सिगरेट और उसके धुएँ से मरते हैं।

धूम्रपान का निषेध होना कुर्आन और हदीस में– कुर्आन में धूम्रपान के हराम होने की कई दलीलें हैं "ऐ ईमान वालो आपस में एक

शेष पृष्ठ .....39 पर

एक महत्वपूर्ण अनुवादित पुस्तक का परिचय

—(इदारा)

नाम पुस्तक : अनुपम आदर्श

लेखक : अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0

अनुवादक : डी0 एन0 चतुर्वेदी (डी0लिट0)

पृष्ठ : 168

मूल्य : ₹ 80/-

प्रकाशक : सत्यमार्ग प्रकाशन (हिन्दी अकादमी) 504/45/2 D टैगोर मार्ग, नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ

—:मिलने का पताः—

1. अल—आफिया, टैगोर मार्ग, नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ
2. अकेडमी ऑफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन, नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
3. मकतब—ए—इस्लाम, गोईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ उ0प्र0

ऐ अल्लाह ईमान वालों की मग़फिरत फरमा।

यह पुस्तक अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0 के आठ प्रसिद्ध व्याख्यानों का संकलन है।

यह व्याख्यान मद्रास (चेन्नई) की एक समिति के अह्वान पर 1925 ई0 में अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी के आठ महत्वपूर्ण विभिन्न पक्षों पर उर्दू में दिये गये थे जिनके शीर्षकों का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है—

1. केवल पैग़म्बरों के जीवन चरित्रों से ही मानवता परिपूर्ण हो सकती है।

2. विश्वव्यापी और सर्वकालिक आदर्श मात्र मुहम्मद सल्ल0 का जीवन चरित्र है।

3. मुहम्मद सल्ल0 के जीवन का ऐतिहासिक पक्ष।

4. मुहम्मद सल्ल0 के जीवन चरित्र में सर्वांग पूर्णतः का पक्ष।

5. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के जीवन की व्यापकता।

6. मुहम्मद सल्ल0 के जीवन का व्यावहारिक पक्ष।

7. इस्लाम के पैग़म्बर सल्ल0 का सन्देश।

8. मुहम्मद सल्ल0 का सन्देश 'आचरण'।

इन व्याख्यानों को ऐसी लोकप्रियता मिली कि उस समय के दक्षिण के सभी प्रसिद्ध हिन्दी, अँग्रेज़ी समाचार पत्रों ने उसके उद्धरण प्रकाशित किये यह व्याख्यान उर्दू में "खुतबाते मद्रास" के नाम से बार—बार प्रकाशित व प्रसारित हुए, इस का अँग्रेज़ी संस्करण "मुहम्मद दी आइडियल प्राफेट" के नाम से छपा और खूब पढ़ा गया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी का उर्दू लेखक या वक्ता कदाचित ही कोई होगा जिसने इस पुस्तक से लाभ न उठाया हो। आवश्यकता थी कि इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो, इस आवश्यकता को सत्यमार्ग प्रकाशन ने डी0एन0 चतुर्वेदी द्वारा पूरा किया। अल्लाह तआला से प्रार्थना है कि वह प्रकाशक तथा अनुवादक दोनों को भरपूर पारितोशिक प्रदान करे।

पुस्तक की शैली तथा ज्ञान से अवगत कराने के लिए पुस्तक के पृष्ठ 126 से एक उद्धरण प्रस्तुत है।

जब मक्का पर विजय हुई तो हरम के प्रांगण में, किस हरम के प्रांगण में? जहाँ आपको अपशब्द कहे गए थे, आप पर गन्दगी फेंकी गई थी, आपकी हत्या का प्रस्ताव पारित हुआ था, कुरैश सरदार अधीनस्थ खड़े थे। उनमें वे भी थे, जो आपको झुठलाया करते थे, वे भी थे जो इस्लाम को मिटाने में एड़ी चोटी का ज़ोर लगा चुके थे। वे भी ये, जो आपकी निन्दा किया करते थे। वे भी थे जो आपको अपशब्द सुनाया करते थे। जो स्वयं इस पवित्रता की प्रतिमूर्ति के साथ दुर्व्यवहार करने का हौसला रखते थे। वे भी थे जिन्होंने आप पर पत्थर फेंके थे, आपके मार्ग में काँटे बिखेरे थे, आप पर तलवारें चलाई थीं। वे भी थे, जिन्होंने आपके प्रियजनों का अकारण रक्तपात किया था, उनका सीना चाक किया था और उनके जिगर और दिल के टुकड़े–टुकड़े कर दिये थे। वे भी थे, जो ग़रीब और असहाय मुसलमानों को सताते थे, उनकी छाती पर अपने अत्याचार की मुहरें, दाग़ कर लगाते थे, उनको जलती रेतों पर लिटाते थे, जलते हुए कोयलों से उनको दाग़ते थे, बरछी की नोक से उनके बदन छेदते थे। आज यह सब अपराधी नतमस्तक हो कर खड़े थे। पीछे 10 हज़ार रक्तपाती तलवारें मुहम्मद सल्ल0 के एक इशारे की प्रतीक्षा में थीं, सहसा पवित्र मुख से वाक्य निकलते हैं। प्रश्न होता है, कुरैश! बताओ, मैं आज तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करूँ? उत्तर मिलता है, मुहम्मद! तू हमारा कुलीन भाई और कुलीन भतीजा है। आदेश होता है "आज मैं वही कहता हूँ, जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने अत्याचारी भाईयों से कहा था" आज के दिन तुम पर कोई दोषारोपण नहीं। "जाओ तुम सब आज़ाद हो"।

यह सत्य है कि स्वयं प्राप्त परिचय की बराबरी मेरा परिचय नहीं कर सकता। अतः अनुरोध है कि पुस्तक प्राप्त कर के स्वयं परिचित हो कर लाभान्वित हों।

❖❖❖

सिगरेट के धुएं का .....

दूसरे के माल बातिल तरीके से न खाओ, लेन–देन होना चाहिए आपसी रज़ामन्दी से, और अपने आप को क़त्ल न करो यक़ीन मानो कि अल्लाह तुम्हारे ऊपर मेहरबान है" (सूरः निसा–20) इस आयत में गलत तरीके से माल खाने वालों के लिए हराम होने की दलील है इन्सान के क़त्ल करने की हुरमत भी इसमें शामिल है और सिगरेट भी क़त्ल का सबब बनती है। दूसरी जगह क़ुर्आन कहता है "और अपने हाथों अपने आप को हलाकत में न डालो" यह आयत भी धूम्रपान को हराम करने के लिए काफी है क्योंकि धूम्रपान करना भी अपने आपको हलाकत में डालना है। इसी तरह धूम्रपान के हराम होने की बहुत सी हदीसें हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया जो शख्स गला घोंट कर खुदकुशी करेगा व जहन्नम की आग में गला घोंटता रहेगा। (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)। धूम्रपान के कारण स्वशन तंत्र बेकार हो जाने की वजह से वह भी गला घोटने में शामिल होगा।

और आखिर में लोगों से निवदेन है कि धूम्रपान को जड़ से मिटाएं क्योंकि जीवन बहुत मूल्यवान है। आइए हम सब मिलकर दुआ करें कि अल्लाह सभी को इस मर्ज़ से दूर रखे और हमें बुराइयों से बचने की समझ अता करे।

आमीन

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

लीबिया मानवाधिकार परिषद से निलंबित– संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मानवाधिकार परिषद से लीबिया की सदस्यता निलंबित करने का आम सहमति से फैसला किया है। उधर, अंतर्राष्ट्रीय अपराध अदालत ने कहा है कि लीबिया में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा से संबंधित प्राप्त सूचनाओं की प्राथमिक जांच के बाद मुख्य अभियोजक इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इस मामले में जांच जरूरी है।

निलंबन प्रस्ताव 50 से अधिक देश एक साथ मिलकर लाए थे, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा में पारित कर दिया गया। इस प्रस्ताव में लीबिया की मानवाधिकार स्थिति पर गहरी चिंता जताई गई है। लीबिया मई 2010 से इसका सदस्य है और उसका कार्यकाल 2013 तक है। उधर, आईसीसी के मुख्य अभियोजक लुई मोरेनो–ओकौंपो के कार्यालय से जारी बयान के मुताबिक वह लीबिया में मानवता के खिलाफ हुई घटनाओं की जांच शुरू कर रहे हैं।

दुनिया में बढ़ रही है इस्लामिक बैंकिंग- **इसके अंतर्गत ब्याज न लिया जाता है और न ही दिया जाता है।**

आर्थिक मंदी के बाद दुनिया में इस्लामिक बैंकिंग का चलन बढ़ने लगा है और भारत सहित कई देश इसके लिए अपने दरवाजे खोल रहे हैं।

एक अंतर्राष्ट्रीय इस्लामिक बैंकिंग विशेषज्ञ ने यह बात कही। इस्लामिक बैंकिंग के विशेषज्ञ माजलान हुसैन ने 17वें राष्ट्रमंडल विधि सम्मेलन में कहा कि इस्लामिक बैंकिंग का मौजूदा कारोबार 1,200 अरब डालर तक है। परंपरागत बैंकिंग के मुकाबले यह बहुत छोटी रकम है। परंपरागत बैंकिंग का कारोबार इस समय 243,000 अरब डालर तक है। लेकिन यह भी मानना होगा कि 1,000 अरब डालर का यह कारोबार पिछले 40 साल में हासिल हुआ है।

75 देशों में इस्लामिक बैंकिंग के कारोबार को कानूनी मान्यता मिली हुई है।

पूरे यूरोप में बिकेगा एक जैसा चार्जर– यूरोप भर में आने वाले समय में सभी कंपनियों के मोबाइल फोनों के लिए एक ही चार्जर रहेगा। यानी एक ही चार्जर से यूरोप में कहीं भी किसी भी कंपनी के मोबाइल फोन को चार्ज किया जा सकेगा।

यूरोपीय संघ की 14 प्रमुख मोबाइल फोन कंपनियों ने इस पर सहमति जताई है। कंपनियों का कहना है कि इससे ग्राहकों को राहत मिलेगी तथा इलेक्ट्रानिक कचरे को कम किया जा सकेगा। यह समान चार्जर इसी साल बिकने लगेगा।

भारत में मोबाइल चार्जर-

❖ एक दर्जन से अधिक कंपनियों के चार्जर बाजार में उपलब्ध हैं।

❖ नोकिया की बाजार हिस्सेदारी अधिक होने के चलते उसके चार्जर में लगाने जाने वाले कनेक्टर का भी बड़ा बाज़ार है।

❖ देश में चाइनीज चार्जर व कनेक्टरों का भी बड़ा बाजार है 15 रूपये से 200 रूपये तक के कनेक्टर और चार्जर भारतीय बाजार में उपलब्ध हैं। ❑❑